सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 240, नई दिल्ली । रविवार, 10 नवम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

यह मत मानिए कि जीत ही सब कुछ है, महत्वपूर्ण यह है कि आप किस उद्देश्य के लिए जीतना चाहते हैं...

03 दिल्ली में छठ पूजा पर सार्वजनिक अवकाश घोषित

06 डबिंग आर्टिस्ट के तौर पर बनाएं अपना करियर

08 अपराधियों का महिमामंडन एक चिंताजनक प्रवृत्ति

दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी के एक निर्देश से दिल्ली के सभी व्यवसायिक वाहनों के मालिक परेशान और जल्द होगी जनता भी परेशान

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा दिल्ली में चालित बुराड़ी वाहन जांच शाखा से बिना किसी पूर्व सूचना जारी किए और बिना झूलझूली वाहन जांच शाखा की वाहन जांच शाखा में वाहनों की जांच की क्षमता जाने एक प्राइवेट कम्पनी जिसका टैंडर भी समाप्त हुए काफी समय हो चुका है को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से झूलझूली वाहन जांच शाखा में जांच के आदेश जारी कर दिए। दिल्ली के सभी वाहन मालिकों की तरफ से इसका विरोध किया जा रहा है और लगातार इसके लिए सभी उच्चाधिकारियों, परिवहन मंत्री से बैठक कर अपनी परेशानी बताकर हल की फरियाद कर रहे हैं पर आला अधिकारी पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा और वह अपने जारी आदेश पर कायम हैं।

आज दिल्ली में यह हालात उत्पन्न हो गया की अगर मोटर वाहन नियम को मान कर व्यवसायिक वाहन चलाना हो तो दिल्ली में व्यवसायिक वाहनों की उपलब्धता नहीं के बराबर हो जाएगी क्योंकि झूलझूली वाहन जांच शाखा में वाहन मालिकों को वाहन जांच के लिए लेने वाली अपॉइंटमेंट 30 नवम्बर से भी आगे तक फूल है। अब जब वाहन मालिकों को वाहन जांच के लिए अपॉइंटमेंट ही नहीं मिलेगी तो वह वाहन जांच कैसे करवाएगा। **मान्य वाहन जांच प्रमाण पत्र का नहीं होने का अर्थ मोटर वाहन नियम के अनुसार**

1. सभी अन्य मान्य दस्तावेजों का भी अमान्य होना होता है. बिना वाहन के मान्य दस्तावेजों के वाहन सड़कों पर जनता को सेवा कैसे प्रदान करें बड़ा सवाल ?

2. बिना मान्य वाहन जांच प्रमाण पत्र के होने के बाद वाहन जांच प्रमाण पत्र की फ़ीस तभी कट सकती हैं जब

वाहन जांच की अधिकृत घोषित फीस के साथ 50 रुपए प्रतिदिन का जुर्माना और वाहन पंजीकरण रिन्यू के लिए अधिकृत घोषित फीस जमा करवाई जाए, अर्थ सिर्फ़ एक अधिकारी के कारण दिल्ली के अधिकतम व्यवसायिक वाहन मालिकों पर बिना किसी गलती के मोटा जुर्माना।

दूसरी तरफ बुराड़ी वाहन जांच शाखा में वाहनों के जांच की क्षमता होते हुए भी वाहन मालिक वहां अपने वाहनों की जांच नहीं करवा सकते और अपने वाहनों जिस से उनके और उनके परिवार का भरण पोषण होता है की निगरानी करने के सिवा कोई कार्य नहीं बचता क्योंकि मान्य इंश्योरेंस होते हुए भी वह मोटर वाहन नियम के अनुसार अमान्य है और अगर वाहन को कोई नुकसान हो गया तो इंश्योरेंस कम्पनी क्लेम भी नहीं देगी।

अब आप ही बताए की दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधि के लिए पंजीकरण वाहन मालिकों का ऐसा क्या गुनाह है जो बिना किसी गलती किए भी जुर्माना भी भरे और अपने परिवार के भरण पोषण के लिए कर्जा ले।

क्या दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारी का यह निर्णय आप सभी को उचित लगता हैं की जिस शाखा में मात्र 200 वाहनों की जांच करने की क्षमता हो वहां 1000 वाहनों

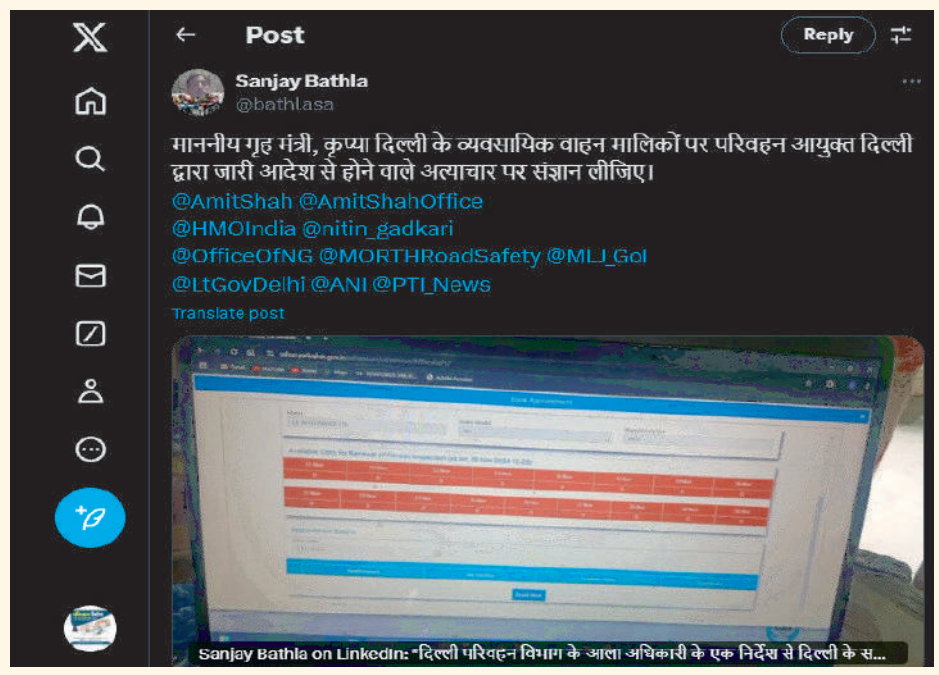

को जांच के आदेश जारी कर दे।

उपराज्यपाल दिल्ली को इस मामले में जल्द से जल्द परिवहन आयुक्त को निर्देश जारी कर वाहनों की जांच को तत्काल प्रभाव से वापिस बुराड़ी वाहन जांच शाखा में शुरू करवाना चाहिए। नहीं तो वाहन मालिकों के साथ ही दिल्ली की जनता को भी परेशानियां शुरू हो जाएगी क्योंकि कोई भी सही वाहन मालिक अपने वाहन को बिना दस्तावेज पूरी किए नहीं चलाएगा और आज की स्थिति यही सिद्ध करती हैं की वाहनों की जांच झूलझूली वाहन जांच शाखा में रही तो 60 % व्यवसायिक वाहन जल्द ही खड़े हो जाएंगे और जनता अपने निज वाहनों या बाहरी राज्यों के पंजीकृत अवैध वाहनों की सेवा लेने को मजबूर होंगे।

दोनों ही स्थितियों में जनता की सुरक्षा को खतरा होगा और प्रदूषण में इजाफा

दिल्ली मेट्रो ने यूपी-बिहार के लोगों के लिए बड़ा फैसला, नई दिल्ली और आनंद विहार स्टेशन से शुरू की खास

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो ने छठ पूजा के बाद बढ़ने वाली भीड़ को देखते हुए नई दिल्ली और आनंद विहार मेट्रो स्टेशनों से सुबह जल्दी मेट्रो ट्रेनें शुरू की हैं। 10 और 11 नवंबर को नई दिल्ली मेट्रो स्टेशन से पहली मेट्रो सुबह 5 .15 बजे और आनंद विहार मेट्रो स्टेशन से पहली मेट्रो 5 .35 बजे उपलब्ध होगी। इससे यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में सुविधा होगी।

नई दिल्ली। छठ पूजा के बाद बिहार से आने वाली ट्रेनों में भीड़ बढ़ेगी। इसके मद्देनजर दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने मेट्रो के फेरे बढ़ा दिए हैं। साथ ही नई दिल्ली और आनंद विहार मेट्रो स्टेशन से दो दिन सामान्य दिनों के मुकाबले सुबह में जल्दी मेट्रो ट्रेनें उपलब्ध होंगी। शनिवार से ही यह सुविधा शुरू कर दी गई है।

डीएमआरसी के अनुसार दस और 11 नवंबर को नई दिल्ली मेट्रो स्टेशन से पहली मेट्रो सुबह सवा पांच बजे और आनंद विहार मेट्रो स्टेशन से पहली मेट्रो साढ़े पांच बजे उपलब्ध होगी, क्योंकि बिहार से आने वाली ट्रेनें नई दिल्ली और आनंद विहार रेलवे स्टेशन ही पहुंचती हैं।

लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में नहीं होगी परेशानी

इस वजह से इन दोनों रेलवे स्टेशनों के नजदीक स्थित मेट्रो स्टेशनों से मेट्रो उपलब्धता का समय घटा गया है, ताकि छठ पूजा के बाद दिल्ली वापस आने वाले यात्रियों को रेलवे स्टेशन पर उतरने के बाद अपने गंतव्य तक पहुंचने में सुविधा हो सके। सामान्य दिनों में नई दिल्ली मेट्रो स्टेशन से पहली मेट्रो 5:46 बजे और आनंद विहार से पहली मेट्रो सुबह 6:04 बजे उपलब्ध होती है।

हो जाएं सावधान ! दिल्ली में पुराने वाहनों पर लटकी तलवार , इन गाड़ियों पर होगी कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

सीएक्यूएम ने दिल्ली में प्रदूषण से निपटने के लिए पुराने वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। 15 साल से अधिक पुराने पेट्रोल इंजन वाले वाहनों और 10 साल से अधिक पुराने डीजल इंजन वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। ग्रेप के नियमों के उल्लंघन की शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई लंबित मामलों को जल्द निपटाने और कार्रवाई रिपोर्ट शिकायतकर्ता से साझा करने के निर्देश दिए हैं।

नई दिल्ली। राजधानी में प्रदूषण व अगले कुछ दिनों ठंड भी बढ़ने की संभावना के मद्देनजर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने शुक्रवार को समीक्षा बैठक की। इसके बाद ग्रेप (ग्रेडेड एक्शन प्लान) के प्रावधानों के पालन को लेकर हो रही हीलाहवाली व शिकायतों पर कार्रवाई में देरी को लेकर आयोग ने चिंता जाहिर की और संबंधित विभागों को सख्ती से कार्रवाई के निर्देश दिए। उम्र पूरी कर चुके 15 वर्ष से अधिक पुराने पेट्रोल इंजन वाले वाहनों व 10 वर्ष पुराने डीजल इंजन वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए।

बैठक में दिल्ली के मुख्य सचिव सहित संबंधित सभी विभागों के वरिष्ठ अधिकारी

शामिल हुए। बैठक में दिल्ली सरकार ने आयोग को जानकारी दी कि चिन्हित 13 हॉट स्पॉट पर प्रदूषण कम करने के लिए विशेष कार्ययोजना तैयार कर कार्रवाई की जानकारी आयोग को दी।

संबंधित राज्यों के साथ बेहतर समन्वय की आवश्यकता

इसके तहत सड़कों पर गड्ढों की मरम्मत, मशीन से सड़कों की सफाई, सड़कों पर पानी का छिड़काव, कूड़ा और मलबा प्रबंधन, कूड़ा जलाने की घटनाओं की निगरानी, यातायात प्रबंधन व जाम वाले जगहों पर ट्रैफिक सुचारू करने पर जोर दिया जा रहा है। बाद में आयोग ने एनसीआर से संबंधित राज्यों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित कर प्रदूषण की रोकथाम के लिए कदम उठाने के भी निर्देश दिए गए।

नगर निगम व दिल्ली छावनी बोर्ड ने पार्किंग शुल्क नहीं बढ़ाया

ग्रेप के पालन व हर तरह की कार्रवाई के समन्वय के लिए दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के जोनल स्तर पर उपायुक्त को नोडल अधिकारी बनाया गया है। आयोग ने नगर निगम व दिल्ली छावनी बोर्ड को एक बार फिर पार्किंग शुल्क बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। आयोग ने पहले भी यह आदेश दिया था लेकिन नगर निगम व दिल्ली छावनी बोर्ड ने पार्किंग शुल्क नहीं बढ़ाया।

कार्रवाई रिपोर्ट शिकायतकर्ता से साझा करने के निर्देश

आयोग ने सड़कों, बाजारों व सार्वजनिक स्थलों पर अवैध पार्किंग व बगैर प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र (पीयूसी) वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए है। साथ ही ग्रेप के नियमों के उल्लंघन की शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई, लंबित मामलों को जल्द निपटाने और कार्रवाई रिपोर्ट शिकायतकर्ता से साझा करने के निर्देश दिए हैं।

प्रतिदिन की कार्रवाई को ग्रुप में शेयर करने के निर्देश

इंटरनेट मीडिया के माध्यम से मिलने वाली शिकायतों पर कार्रवाई के बाद की गई कार्रवाई की जानकारी संबंधित विभागों का पोस्ट सीएक्यूएम को भी टैग करना होगा। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) व एनसीआर से संबंधित राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के नोडल अधिकारियों को जिम्मेदारी दी गई है कि वे प्रतिदिन की कार्रवाई को ग्रुप में शेयर करेंगे।

बरौनी जंक्शन पर शंटिंग के दौरान बड़ी लापरवाही इंजन और बोगी के बिच दबकर शंटमैन की मौत

रितेश राव

बेगूसराय। बिहार के बेगूसराय में रेलवे की बड़ी लापरवाही के कारण बरौनी जंक्शन पर शनिवार सुबह एक रेलकर्मी की कपलिंग खोलते समय इंजन और बोगी के बीच दबकर मौत हो गई.

मृतक रेलवे कर्मचारी की पहचान समस्तीपुर जिले के दलसिंह सराय निवासी 35 वर्षीय अमर कुमार राउत के रूप में हुई है. हादसा तब हुआ, जब अमर बरौनी जंक्शन पर खड़ी बरौनी-लखनऊ एक्सप्रेस की गाड़ी संख्या 15204 के शंटिंग के दौरान कपलिंग खोलने की कोशिश कर थे कि तभी अचानक ट्रेन का इंजन उल्टी दिशा में चलने लगा, जिससे वह इंजन और बोगी के चपेट में आ गए और मौके पर ही उनकी मौत हो गई. घटनास्थल पर मौजूद लोगों के शोर सुनने के बाद लोको पायलट ट्रेन इंजन को आगे लेने की बजाय ट्रेन से उतरकर भाग गया.

जानकारी के मुताबिक अमर ने साल 2021 में अपने पिता के निधन के बाद अनुकंपा पर रेलवे में नौकरी पाई थी. हादसे के बारे में जानकारी देते हुए सोनपुर के डीआरएम विवेक भूषण ने बताया कि पूरे मामले की जांच की जा रही है और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी. उन्होंने कहा कि ऐसी घटना दोबारा न हो इसके लिए उचित प्रबंध किए जायेंगे।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

महिलाओं के लिए दरजी नापने, जिम ट्रेनर अंडर गारमेंट सेल्समैन ब्यूटी पार्लर कार्यों पर पुरुषों की पाबंदी का प्रस्ताव-महिलाओं की नियुक्ति करना होगा

राज्य महिला आयोग का बेड टच व अपराधों से बचाव के लिए कई बिंदुओं पर अमल करने का प्रस्ताव

सभी राज्यों ने महिलाओं बच्चों से बेड टच के बढ़ते मामलों को रोकने हर क्षेत्र में संज्ञान लेकर कानून व दिशा निर्देश बनाना समय की मांग-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

भारत वैश्विक रूप से अकेला ऐसा देश है जिसमें नारी सम्मान को आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक,शासकीय प्रशासकीय स्तरपर अति महत्व दिया जाता है ।यहां नारी को नारायणी,मां दुर्गे, मां काली, मां जगदंबे स्तर पर पौराणिक कथाओं में सम्मान प्राप्त है ऐसा है हमारा भारत देश, साथियों हालांकि हमारे देश में नारियोंको अनेकविशेषाधिकार प्राप्त है, परंतु फिर भी हम देखते हैं कि नारी अत्याचार, प्रताड़ना, जुल्मों का वजन घटने की अपेक्षा समय -समय पर बढ़ने का आभास महसूस होता है, इसलिए समय आ गया है कि जहां बच्चों को स्नेह भरा व गंदी भावना के स्पर्श के बीच अंतर पहचानें के लिए जागरूक करें, वह महिलाओं को बेड टच करने वाले लीकेजेस को बंद करें ताकि यह संदेश उन तथाकथित अपराधियों व बुरी मानसिकता वालों के पास भी पहुंचे कि कुछ भी घटना करेंगे तो गले पड़ जाएगी ।यूपी महिला आयोग ने प्रस्ताव रखा है,सिर्फ महिलाएं ही लें औरतों के कपड़ों के नाप,जिम और योग केंद्रों में हों महिला प्रशिक्षक दरअसल कानपुर में एक जिम जाने वाली महिला की हत्या के बाद इस मामले ने तूल पकड़ा और यूपी महिला आयोग ने 28 अक्टूबर 2024 को एक प्रस्ताव पारित कर प्रशासनिक स्तरपर भेजा है ।चूँकि सभी राज्य सरकारों ने महिलाओं व बच्चों को बेड टच क़े बढ़ते मामलों को रोकने हर क्षेत्र में संज्ञान लेकर कानून नियम व दिशानिर्देश बनाना समय की मांग है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे यूपी राज्य महिला आयोग का बेड टच व अपराधों से बचाव के लिए कई बिंदुओं पर अमल करने का प्रस्ताव।

साथियों बात अगर हम यूपी महिला आयोग द्वारा राज्य में एक प्रस्ताव पारित कर प्रशासन को अमल करने के लिए भेजनें की करें तो, यूपी राज्य महिला आयोग ने महिलाओं को बैड टच से बचाने और पुरुषों के महिलाओं के प्रति गलत इरादों को रोकने के लिए एक प्रस्ताव दिया है,जिसके तहत अब राज्य में पुरुष टेलर महिलाओं के कपड़ों की माप नहीं ले सकेंगे ।आयोग का मानना है कि इस तरह के पेशे में शामिल पुरुषों की वजह से महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। जिम, बुटीक और दुकानों पर बैड टच के मामले बढ़ रहे हैं, ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए बुटीक और जिम में महिला होनी ही चाहिए, इससे महिलाओंको राहत मिलेगी आयोग का सीधा सपाट कहना है कि महिलाओं के कपड़ों की माप के लिए अब पुरुष टेलर नहीं चलेगा,कम से कम यूपी में महिलाओं के कपड़ों की माप केवल महिला टेलर ही लेंगी। यही नहीं महिला आयोग ने अब टेलर की दुकान पर सीसीटीवी अनिवार्य कर दिया है। मतलब यूपी में कोई टेलर अब तभी महिलाओं के कपड़े सी सकेगा। जब उसकी दुकान पर माप लेने वाली कोई महिला होगी। इस फैसले को सब अपने अपने चश्मे से देख रहे हैं,लेकिन महिला आयोग का कहना है कि महिला सुरक्षा के लिए ये फैसला अहम है।

साथियों बात अगर हम 28 अक्टूबर 2024 को राज्य महिला आयोग के प्रस्ताव की करें तो आयोग ने कई बिंदुओं को लेकर सरकार को प्रस्ताव भेजा है जो कि महिलाओं की सुरक्षा और रोजगार से जुड़ा हुआ है ।मीडिया को जानकारी देते हुए कहा कि आज कल ब्यूटी पार्लर में भी पुरुष महिलाओं का मेकअप और कपड़े पहनाते हैं जो कि गलत है उन्होंने कहा कि जहां पर भी महिलाओं संबंधित अंडर गारमेंट मिलते हैं वहां भी महिला कर्मचारी होनी चाहिए, कुछ मिलाकर जहां भी महिलाओं के काम को पुरुष करते हैं वहां महिला

सहकर्मी होनी चाहिए। स्कूलों की गाड़ियों में भी अब महिला कर्मचारी रख़ने कहा कि प्रदेश में बहुत सारे मामले बैड टचकोलेकर आते हैं, जिममें उनका वीडियो बनाकर ब्लैक मेल किया जाता है ।उन्होंने कहा कि महिलाएं ना चाहते हुए भी मजबूरी में मेकअप, कपड़ों की नाप और अंडर गारमेंट्स पुरुषों से लेती हैं और कभी-कभी बैड टच का शिकार होती हैं ।वें कहती हैं कि कई बार स्कूलों की गाड़ियों में भी पुरुष ड्राइवर और सहकर्मी होते हैं और बच्चियों के साथ घटनाएं होती हैं इन सबसे बचने के लिए महिला सहकर्मी का होना जरूरी है ।प्रस्ताव के मंजूर होने के बाद सभी को पुलिस वेरिफिकेशन कराना आवश्यक है, जांच के बाद उनको क्लीन चिट दी जाएगी, उन्होंने कहा कि यदि कोई भी इन नियमों का पालन नहीं करता है तो उनपर कड़ी कार्रवाई की जाएगी ।साथ ही सीसीटीवी कैमरे भी अपने कार्य क्षेत्र में लगाने होने। उन्होंने कहा कि इस प्रस्ताव के अमल में आने के बाद महिलाओं को भी रोजगार मिलेगा साथ ही वो भी अपने परिवार का भरण पोषण कर सकेंगी प्रस्ताव के तहत उनका ये मकशद नहीं है कि पुरुष अपना काम छोड़ दें या अपने कर्मचारियों को निकाल दें, उनका मकसद है कि महिलाओं को सुरक्षा और अपराध से निजात मिले, उन्होंने कहा कि यदि कोई महिला पुरुष दर्जी से नाप या ब्यूटी पार्लर में पुरुष कर्मी से मेकअप या कपड़े पहनना चाहती हैं तो उसको इसके पहले लिख कर देना होगा, इसी प्रकार जिम योगा सेंटर से लेकर जहां भी महिलाओं संबंधित काम हो रहे हैं वहां भी लिखित में देना होगा।

साथियों बात अगर हम 28 अक्टूबर 2024 को हुई राज्य महिला आयोग की सभा की करें तो बैठक में महिलाओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों के संरक्षण से जुड़े कई निर्णय लिए गए महिला आयोग के प्रस्ताव में कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि हर चीज का हमेशा दूसरा पक्ष भी होता है ।महिला एवं आयोग एक मेंबर ने कहा, मैं कह रही हूं कि मैं विकल्प प्रदान करने के पक्ष में हूं और यह महिलाओं पर छोड़ती हूं कि वे पुरुषों के साथ अधिक सहज हैं या महिलाओं के साथ। उन्होंने कहा कि मुद्दा यह है कि जो महिलाएं बैड टच की शिकायत करती हैं और उनके पास विकल्प होना चाहिए। क्या उनके प्रस्तावों को पूरे राज्य में कहीं भी लागू किया गया है तो कहा, हम यह पता लगाने की प्रक्रिया में हैं कि क्या हमारे प्रस्ताव सभी जिलाधिकारी तक पहुंचे हैं। हमने अपने प्रस्ताव मुख्य सचिव को भी भेजे हैं और सरकार ही है जो प्रस्तावों को लागू करेगी।

साथियों बात अगर हम कुछ वर्गों द्वारा इस प्रस्ताव की आलोचना वह तारीफ करने की करें तो,कुछ नें कहा,हमें नहीं लगता कि यह न्यायसंगत निर्णय है क्योंकि यह हर किसी की व्यक्तिगत पसंद है कि वह पुरुषकर्मी से अपना कार्य करवाना चाहताहै या महिलाकर्मी से, दर्जी की दुकानों और महिलाओं के कपड़ों की दुकानों में महिलाओं की मौजूदगी अनिवार्य किए जाने के प्रस्ताव से कोई परेशानी नहीं है। लेकिन आखिर इससे व्यक्तिगत पसंदगी की अवहेलना हो रही है ।इससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण विचार नहीं हो सकता, क्योंकि जो आवश्यक है वह यह है कि लोगों के मन में यह मनोविज्ञान पैदा किया जाए कि हम अलग-अलग इंसान नहीं है ।यह सही सोच नहीं है और यह उन लोगों द्वारा किया जा रहा है, जिनकी सोचसंकीर्ण है। ऐसा करने से सैकड़ों लोगों कारोजगार जाने का खतरा है ।उन्होंने कहा, आमतौर पर देखा जाता है कि महिलाएं खुद ही दर्जी को अपना नाप देती हैं। यह कोई बड़ा मुद्दा नहीं है ।अगर महिला आयोग कुछ करना चाहता है, तो महिलाओं के साथ दुष्कर्म और हत्या की घटनाओं को रोके। वे इस बारे में कुछ नहीं कर पा रहे हैं और छोटी-छोटी बातों पर इस तरह की बातें कर रहे हैं ।वहीं कुछ नें महिला आयोग के प्रस्ताव का समर्थन किया है। उनका कहना है कि यह सही है कि कपड़े सिलवाने के लिए नाप देते वक्त पुरुष दर्जियों द्वारा महिलाओं से छेड़छाड़ किए जाने की अनेक शिकायतें मिल रही हैं। ऐसे में आयोग के प्रस्ताव पर आधारित कानून बनाया जाना चाहिए ।प्रस्ताव पर कानून बनाया जाना चाहिए। प्रस्ताव का स्वागत किया है। उन्होंने कहा, इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं है कि नाप कौन ले रहा है लेकिन अगर महिला ग्राहक कहती है तो हमारे पास उसका नाप लेने के लिए महिलाकर्मी होनी चाहिए। इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि महिलाओं के लिए दरजी नापने, जिम ट्रेनर अंडर गारमेंट सेल्समैन ब्यूटी पार्लर कार्यों पर पुरुषों की पाबंदी का प्रस्ताव-महिलाओं की नियुक्ति करना होगा ।राज्य महिला आयोग का बेड टच व अपराधों से बचाव के लिए कई बिंदुओं पर अमल करने का प्रस्ताव ।सभी राज्यों ने महिलाओं बच्चों से बेड टच के बढ़ते मामलों को रोकने हर क्षेत्र में संज्ञान लेकर कानून व दिशा निर्देश बनाना समय की मांग है।

क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी)

विंटर डाइट में इन तरीकों से करें कच्ची हल्दी को शामिल, सेहत को भी मिलेंगे भरपूर फायदे

कच्ची हल्दी में करक्यूमिन विटामिन सी आयरन और एंटी ऑक्सीडेंट की अच्छी मात्रा पाई जाती हैजो सूजन कम करते हैं इम्यून पॉवर को बढ़ाते हैं और पाचन को सुधारते हैं ।सर्दियों में हल्दी वाला दूध हर्बल चाय सूप सलाद और सब्जियों के रूप में सेवन किया जा सकता है। इसके सेवन से शरीर को गर्म रखकर मौसमी बीमारियों से बचा जा सकता है।

नई दिल्ली। कच्ची हल्दी अदरक के समान दिखने वाली एक प्रकार की जड़ है, जिससे बने हल्दी पाउडर का उपयोग हम डेली लाइफ में करते हैं। इसमें करक्यूमिन, आयरन, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो शरीर के किसी भी अंग में होने वाले सूजन को कम करने, इम्यून पॉवर को बढ़ाने, पाचन क्रिया को सुधारने और त्वचा को चमकदार बनाए रखने में सहायक होते हैं। हल्दी में मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टीरियल गुण हमें सर्दी-जुकाम और खांसी से बचाते हैं और शरीर को नेचुरल तरीके से अंदर से गर्म रखते हैं। इसलिए इसका सर्दियों में सेवन सेहत के लिए कई तरह से फायदेमंद होता है। तो आईए जानते हैं कि इस मौसम में इसका किन किन रूपों में सेवन किया जा सकता है।

हल्दी वाला दूध

एक गिलास दूध में ताजी कद्दूकस की हुई हल्दी को पकाकर पीने से शरीर को गर्माहट मिलती है। इसे रात में सोने से पहले लें, इससे नींद अच्छी आती है और प्रतिरक्षा प्रणाली भी मजबूत बनती है।

हल्दी की हर्बल चाय

अदरक, कच्ची हल्दी, काली मिर्च और तुलसी को पानी में उबालें। यह चाय इम्युन पावर बढ़ाने के साथ सर्दी-खांसी से राहत देती है।

कच्ची हल्दी का अचार

कच्ची हल्दी, नींबू और हरी मिर्च को कुछ हल्के मसालों के साथ मिक्स कर अचार बनाएं। यह लंच या डिनर के साथ खाया जा सकता है और विटामिन सी के साथ एंटी ऑक्सीडेंट्स भी प्रदान करता है।

सब्जियों में हल्दी

रोजाना खाने की सब्जियों या दालों में हल्दी मिलाएं। यह न केवल स्वाद बढ़ाती है बल्कि हड्डियों को मजबूत बनाने और सूजन कम करने में भी सहायक है।

हल्दी का जूस

कच्ची हल्दी, आंवला, और शहद मिलाकर एक पौष्टिक जूस तैयार करें। यह विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट का अच्छा स्रोत है जो पाचन तंत्र सहित समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

सूप में हल्दी

सब्जियों के सूप या दाल में कच्ची हल्दी डालें। यह न केवल सूप को पौष्टिक बनाती है बल्कि शरीर को अंदर से गर्म रखने में भी मदद करती है।

स्मूदी में हल्दी

अपने पसंदीदा फलों या हरी सब्जियों के साथ कच्ची हल्दी मिलाकर स्मूदी बनाएं। यह पाचन में सुधार करती है और सर्दियों में मेटाबालिज्म बढ़ाने में सहायक होती है।

लड्डू या एनर्जी बॉल्स में हल्दी

सत्तू, तिल और ड्राई फ्रूट्स के साथ हल्दी मिलाकर लड्डू या एनर्जी बॉल्स बनाएं। यह ऊर्जा का अच्छा स्रोत है और सर्दियों में गर्मी प्रदान करता है।

सलाद में हल्दी

ताजी कच्ची हल्दी को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर सलाद में डालें। यह पेट को ठंड से बचाती है और सर्दियों में डाइजेशन को सुधारती है।

नींबू के छिलकों को फेंकने की जगह बना लें उनका अचार, कई गुना बढ़ जाएगा खाने का स्वाद

आमतौर पर हम नींबू का इस्तेमाल करके उसके छिलके को फेंक देते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि नींबू के छिलके काफी काम के साबित हो सकते हैं। नींबू के छिलके से आप अचार बना सकते हैं जिसका स्वाद काफी लाजवाब होता है और इससे सेहत को भी फायदा मिलता है। आइए जानें नींबू के छिलके का अचार बनाने की रेसिपी।

नई दिल्ली। नींबू के छिलके जिन्हें हम अक्सर फेंक देते हैं, असल में स्वादिष्ट और पौष्टिक अचार बनाने के लिए एक बेहतरीन सामग्री हैं। नींबू के छिलकों में विटामिन-सी, एंटीऑक्सीडेंट्स और एशेंशियल ऑयल भरपूर मात्रा में होते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए कई तरह से फायदेमंद होते हैं। आइए जानते हैं कैसे नींबू के छिलकों से स्वादिष्ट अचार बना सकते हैं।

नींबू के छिलकों के अचार के फायदे

पाचन में सुधार- नींबू के छिलकों में पाए जाने वाले फाइबर पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। यह कब्ज और अपच की समस्या को दूर करने में कारगर है।

इम्युनिटी बूस्ट- विटामिन-सी से भरपूर नींबू के छिलके हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाते हैं।

वजन घटाने में मदद- नींबू के छिलकों में पाए जाने वाले पेक्टिन फाइबर वजन घटाने में सहायक होता है। यह पेट को लंबे समय तक भरा रखता है जिससे बार-बार खाने की इच्छा नहीं होती है।

त्वचा के लिए लाभदायक- नींबू के छिलकों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा को फ्री रेडिकल से बचाते हैं और त्वचा को स्वस्थ रखते हैं।

दांतों के लिए फायदेमंद- नींबू के छिलके दांतों की सड़न को रोकने में मदद करते हैं और मुंह की दुर्गंध को दूर करते हैं।

नींबू के छिलकों का अचार बनाने की रेसिपी

नींबू के छिलकों का अचार बनाना बहुत ही आसान है। आप इसे घर पर ही आसानी से बना सकते हैं।

सामग्री:

नींबू के छिलके (लगभग 10 नींबू के)
सरसों का तेल
हींग
राई
लाल मिर्च पाउडर
हल्दी पाउडर
नमक

विधि:

नींबू को धोकर उसके छिलके निकाल लें। छिलकों को पतले-पतले टुकड़ों में काट लें।

एक पैन में तेल गरम करें। इसमें हींग, राई और लाल मिर्च डालें।

कटे हुए नींबू के छिलके डालकर भूनें।

हल्दी पाउडर और नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं।

थोड़ा-सा पानी डालकर पकाएं।

जब पानी सूख जाए तो गैस बंद कर दें।

अचार को एक साफ और सूखे जार में भरें।

जार को अच्छी तरह बंद करके ठंडी जगह पर रख दें।

नींबू के छिलकों का अचार आप दाल, चावल या पराठे के साथ खा सकते हैं। यह आपके भोजन का स्वाद बढ़ाएगा और साथ ही आपके स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होगा।

इन टिप्स की भी लें मदद

नींबू के छिलकों को धूप में सुखाने से अचार का स्वाद और बेहतर होता है।

आप अचार में अपने पसंदीदा मसाले भी मिला सकते हैं।

अचार को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए आप इसमें थोड़ा-सा सरसों का तेल डाल सकते हैं।

चेहरे पर निखार लाने के लिए करें कॉफी का इस्तेमाल, नहीं पड़ेगी किसी भी महंगे फेशियल की जरूरत

क्या आप जानते हैं कि आपकी पसंदीदा कॉफी आपकी स्किन के लिए भी काफी फायदेमंद है। इससे कुछ फेस मास्क बनाए जा सकते हैं जिनसे त्वचा पर निखार आ सकता है। कॉफी स्किन को एक्सफोलिएट करने में भी काफी मददगार होती है। आइए जानें कॉफी से बनने वाले फेस पैक्स के बारे में और यह कैसे स्किन के लिए फायदेमंद हो सकती है।

कॉफी सिर्फ सुबह का जागने का जरिया ही नहीं है, बल्कि यह आपकी त्वचा के लिए भी काफी बेहतरीन साबित हो सकती है। कॉफी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स, कैफीन और अन्य पोषक तत्व आपकी त्वचा को कई तरह से फायदा पहुंचा सकते हैं। आइए जानते हैं कॉफी से बनने वाले कुछ फेस मास्क के बारे में, जो त्वचा पर निखार लाने में मदद कर सकते हैं।

कॉफी के फायदे त्वचा के लिए

एक्सफोलिएशन- कॉफी के कणों में नेचुरल एक्सफोलिएटिंग गुण होते हैं, जो डेड स्किन सेल्स को हटाने में मदद करते हैं। इससे आपकी त्वचा चमकदार और मुलायम हो जाती है।

ब्लड सर्कुलेशन- कॉफी में मौजूद कैफीन ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाता है, जिससे त्वचा में ऑक्सीजन और पोषक तत्वों का प्रवाह बेहतर होता है।

एंटीऑक्सीडेंट्स- कॉफी में क्लोरोजेनिक एसिड जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से त्वचा को बचाते हैं।

सूजन कम करना- कैफीन में वासोकोनसट्रिक्टिव गुण होते हैं, जो सूजन को कम करने में मदद करते हैं।

सेल्युलाइट कम करना- कॉफी सेल्युलाइट को कम करने में मदद कर सकती है।

त्वचा का टोन समान करना- कॉफी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स त्वचा का रंग समान करने में मदद करते हैं।

कॉफी फेस मास्क कैसे बनाएं?

कॉफी फेस मास्क बनाने के लिए आप अपनी पसंद के अनुसार कई तरह के सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं।

कॉफी और शहद- एक चम्मच पिसी हुई कॉफी को एक चम्मच शहद के साथ मिलाएं। यह मास्क त्वचा को नमी प्रदान करता है और उसे मुलायम बनाता है।

कॉफी और दही- एक चम्मच पिसी हुई कॉफी को दो चम्मच दही के साथ मिलाएं। यह मास्क त्वचा को टोन करता है और उसे चमकदार बनाता है।

कॉफी और नारियल का तेल- एक चम्मच पिसी हुई कॉफी को एक चम्मच नारियल के तेल के साथ मिलाएं। यह मास्क ड्राई स्किन के लिए बहुत अच्छा होता है।

कॉफी और एलोवेरा जेल- एक चम्मच पिसी हुई कॉफी को दो चम्मच एलोवेरा जेल के साथ मिलाएं। यह मास्क त्वचा को शांत करता है और जलन को कम करता है।

कॉफी फेस मास्क कैसे लगाएं?

चेहरे को साफ पानी से धो लें।

कॉफी फेस मास्क को चेहरे पर समान रूप से लगाएं।

15-20 मिनट के लिए छोड़ दें।

ठंडे पानी से चेहरा धो लें।

मॉइस्चराइजर लगाएं।

इन बातों का ध्यान रखें

कॉफी फेस मास्क को आंखों के आसपास न लगाएं।

अगर आपको कॉफी से एलर्जी है तो इसका इस्तेमाल न करें।

अगर आपकी त्वचा सेंसिटिव है तो पहले एक पैच टेस्ट जरूर करें।

सांसों पर संकट! दिल्ली में प्रदूषण कम करने के लिए पहली बार ड्रोन से छिड़काव

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में वायु प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए पहली बार ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। आनंद विहार में एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत ड्रोन से पानी का छिड़काव किया गया। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बताया कि राजधानी में 13 हॉटस्पाट हैं जहां प्रदूषण का स्तर अधिक है। ऐसे इलाकों में ड्रोन से पानी का छिड़काव कराकर उसका प्रभाव देखा जाएगा।

नई दिल्ली। वायु प्रदूषण का स्तर कम करने के लिए राजधानी में शुक्रवार को पहली बार ड्रोन से पानी का छिड़काव किया गया। पायलट प्रोजेक्ट के तहत आनंद विहार में छिड़काव कर इसकी शुरुआत की गई। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बताया कि राजधानी में 13 हॉटस्पाट हैं, जहां प्रदूषण का स्तर अधिक है।

ऐसे इलाकों में ड्रोन से पानी का छिड़काव कराकर उसका प्रभाव देखा जाएगा। यह स्टडी फेज है। अगर इसमें सफलता मिली तो अन्य हाटस्पाट पर भी इससे छिड़काव करवाया जाएगा। गोपाल राय ने बताया कि वायु प्रदूषण स्रोतों की पहचान और उसका निदान करने में ड्रोन तकनीक महत्वपूर्ण है।

पायलट प्रोजेक्ट के तहत ड्रोन से पानी का हो रहा छिड़काव

उन्नत सेंसर से लैस ड्रोन भीड़भाड़ वाले उन क्षेत्रों तक पहुंचने में सक्षम है, जहां एंटी स्मोग गन जैसे पारंपरिक तरीकों से छिड़काव करना मुश्किल है। सरकार का उद्देश्य है कि नई तकनीक का उपयोग कर प्रदूषण की समस्या से निपटा जाए। इसलिए पायलट प्रोजेक्ट के तहत ड्रोन से पानी का छिड़काव कराकर देखा जा रहा है।

ड्रोन एक बार में 15 लीटर पानी लेकर उड़ सकता है। छिड़काव के बाद इसका कितना प्रभाव होता है, इसकी रिपोर्ट का पर्यावरण विभाग और दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) के अधिकारी विश्लेषण करेंगे। इसके बाद इस प्रोजेक्ट की आगे की दिशा निर्धारित की जाएगी।

25 सितंबर को विंटर एक्शन प्लान की हुई थी घोषणा

पर्यावरण मंत्री ने बताया कि सर्दी के मौसम में प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए 25 सितंबर को 21 फोकस प्वाइंट पर आधारित विंटर एक्शन प्लान की घोषणा की गई थी। उसमें हॉटस्पॉट पर ड्रोन तकनीक का उपयोग करके प्रदूषण को कम करने की पहल करने का सुझाव दिया गया था।

हॉटस्पॉट इलाकों में लगाए गए 80 मोबाइल एंटी स्मॉग गन

हर हॉटस्पॉट के लिए अलग एक्शन प्लान बनाकर काम किया जा रहा है। सरकार ने इसके लिए 13 कोआर्डिनेशन टीमें बनाई हैं। धूल से होने वाला प्रदूषण कम करने के लिए हॉटस्पॉट इलाकों में 80 मोबाइल एंटी स्मोग गन लगाए गए हैं।

13 विभागों के अधिकारी अलग-अलग स्थानों पर निर्माण स्थलों का निरीक्षण कर रहे हैं और मानदंडों के उल्लंघन पर कार्रवाई कर रहे हैं। 68 स्टैटिक एंटी स्मोग गन को सड़कों और खुले क्षेत्रों में लगाया गया है।

'वॉट्सऐप चैट में हथियार उठाने के लिए नहीं कहा था', पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन ने कोर्ट में दी दलील

दिल्ली दंगे की साजिश में शामिल मुख्य आरोपी एवं पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन के वकील ने कड़कड़डूमा कोर्ट में दलील देते हुए कहा कि उनके मुवक्किल के खिलाफ सबूत के तौर पर पेश किए गए वाट्सएप चैट में किसी को सरकार के खिलाफ हथियार उठाने को नहीं कहा था। चक्का जाम करना कोई आतंकवादी घटना नहीं है। इसलिए आतंकवाद विरोधी कानून यूएपीए का प्रविधान लागू नहीं हो सकता है।

पूर्वी दिल्ली। दिल्ली दंगे की साजिश के मामले में मुख्य आरोपित एवं पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन ने शुक्रवार को कड़कड़डूमा स्थित कोर्ट में वॉट्सऐप चैट के साक्ष्यों पर पक्ष रखा गया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश समीर बाजपेयी की कोर्ट में ताहिर के वकील ने दलील दी कि उनके मुवक्किल के खिलाफ साक्ष्य के रूप में पेश किए गए वाट्सएप चैट लोगों को हिंसा करने के लिए उकसाने वाले नहीं हैं।

13 नवंबर को होगी अगली सुनवाई

किसी वॉट्सऐप चैट में लोगों को हिंसा में शामिल होने के लिए नहीं कहा गया। कहीं भी लोगों को भारत सरकार या उसकी एजेंसियों के खिलाफ हथियार उठाने के लिए भी नहीं कहा था। अब इस मामले में अगली सुनवाई 13 नवंबर को होगी। वकील ने कोर्ट में कहा कि जिन वॉट्सऐप संदेशों पर जांच एजेंसी भरोसा कर रही है, उनमें केवल शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन और चक्का जाम की बात है।

ताहिर के वकील ने पूछे ये सवाल

चक्का जाम कोई आतंकवादी कृत्य नहीं है। ताहिर के वकील ने कहा कि जब तक यह साक्ष्य न मिल जाए कि सशस्त्र विद्रोह या उग्रवाद को बढ़ावा दिया गया था, तब तक आतंकवाद विरोधी कानून यूएपीए का प्रविधान लागू नहीं किया जा सकता। साथ ही प्रश्न पूछा कि क्या लोगों से मिलना और विरोध करना भी जांच एजेंसी के अनुसार आतंकवादी गतिविधि है। वकील ने कहा कि जांच एजेंसी को यह स्पष्ट करना होगा कि इस मामले में साजिश क्या और आरोपितों द्वारा कौन सा अपराध किया गया है। विरोध प्रदर्शन केवल नागरिकता संशोधन विधेयक के खिलाफ सीमित था।

20 आरोपितों के खिलाफ प्राथमिकी

एक समुदाय किसी विधेयक पर किस तरह प्रतिक्रिया करता है, यह अलग मुद्दा है। इसे भारत सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन नहीं माना जा सकता। इस केस में 20 आरोपितों के खिलाफ प्राथमिकी पंजीकृत है।

दिल्ली सरकार ने प्रस्ताव को किया पास, प्रदूषण रोकने में जुटेंगे 10 हजार सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स

सीएम आतिशी ने कहा कि सोमवार से सीडीवी को कॉल आउट नोटिस जारी किए जाएंगे और फिर वे मंगलवार और बुधवार को संबंधित जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय में पंजीकरण शुरू कर सकते हैं। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि रजिस्ट्रेशन के दो-तीन दिनों के भीतर सीडीवी को प्रदूषण हॉटस्पॉट के प्रबंधन धूल प्रदूषण और कचरा जलाने को रोकने जैसे कामों के लिए तैनात किया जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने शनिवार को कहा कि लगभग 10,000 सिविल डिफेंस वॉलंयिटर्स (सीडीवी) अगले हफ्ते से चार महीने के लिए काम पर लौट आएंगे। इन्हें पिछले साल बस मार्शल के पद से हटा दिया गया था। इन्हें प्रदूषण रोकने के उपायों को लागू करने के लिए तैनात किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने इस आशय के एक प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

उन्होंने कहा कि सोमवार से सीडीवी को कॉल आउट नोटिस जारी किए जाएंगे और फिर वे मंगलवार और बुधवार को संबंधित जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय में पंजीकरण शुरू कर सकते हैं। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि रजिस्ट्रेशन के दो-तीन दिनों के भीतर सीडीवी को प्रदूषण हॉटस्पॉट के प्रबंधन, धूल प्रदूषण और कचरा जलाने को रोकने जैसे कामों के लिए तैनात किया जाएगा।

अक्टूबर 2023 में इन सीवीडी को हटा दिया गया: CM आतिशी

मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सीडीवी को 2018 में तत्कालीन केजरीवाल सरकार द्वारा बस मार्शल के रूप में तैनात किया गया था, लेकिन भाजपा ने एक साजिश के तहत उन्हें अक्टूबर 2023 में हटा दिया था।

मंगलवार से ये अपना रजिस्ट्रेशन कर सकेंगे: CM आतिशी

CM आतिशी ने कहा- मैं बस मार्शलों को आश्वस्त करती हूं कि आने वाले कुछ दिनों में ही बस मार्शलों की स्थायी नियुक्ति का प्रस्ताव LG के पास भेजेंगे। जब तक इन्हें स्थायी नियुक्ति नहीं मिल जाती तब तक फरवरी के महीने तक बस मार्शलों को प्रदूषण के खिलाफ मुहिम में जोड़ा जा रहा है। सोमवार से बस मार्शलों का Call Out Notice जारी किया जाएगा और मंगलवार से ये अपना रेजिस्ट्रेशन DM office में कर सकते हैं।

सीडीवी को नियमित करने के लिए जल्द प्रस्ताव भेजेगी: CM आतिशी

उन्होंने कहा, "हालांकि केजरीवाल के नेतृत्व में आप नेताओं और मंत्रियों ने हटाए गए बस मार्शलों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी और उन्हें उनकी नौकरियां वापस दिलाईं।र उन्होंने कहा कि 2018 में केजरीवाल जी की सरकार ने DTC बसों में मार्शलों की नियुक्ति की ताकि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ ना हो और बच्चे और बुजुर्ग भी सुरक्षित सफर कर सकें। लेकिन BJP ने अप्रैल 2023 में षड्यंत्र करके 10 हजार बस मार्शलों की तनख्वाह रोक ली और फिर अक्टूबर 2023 में उन्हें नौकरी से निकाल दिया।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि दिल्ली सरकार सीडीवी को नियमित करने के लिए जल्द ही एक प्रस्ताव भेजेगी। वित्त और राजस्व विभागों द्वारा आपत्ति जताए जाने के बाद सीडीवी को 1 नवंबर, 2023 से हटा दिया गया था कि सीडीवी आपदा शमन से संबंधित कार्यों में काम करने के लिए थे और बस मार्शल के रूप में उनकी तैनाती गलत थी।

मुस्लिम शादियों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन सिस्टम बनाए दिल्ली सरकार, हाईकोर्ट ने दिया आदेश

परिवहन विशेष न्यूज

हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार को मुस्लिम विवाहों के लिए एक निश्चित समय सीमा के भीतर ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली बनाने का निर्देश दिया है। इस आदेश से मुस्लिम जोड़ों को अपने विवाह को पंजीकृत करने में होने वाली परेशानियों से निजात मिलेगी। अभी तक मुस्लिम जोड़ों को विशेष विवाह अधिनियम 1954 के तहत अपने विवाह को पंजीकृत करने के लिए मजबूर होना पड़ता था जो उनके धार्मिक विश्वासों के विरुद्ध था।

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार को एक निश्चित समय सीमा के भीतर अपने आधिकारिक पोर्टल पर मुस्लिम विवाहों की ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली बनाने निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति संजीव नरूला की पीठ ने अपने आदेश में मुख्य सचिव को व्यक्तिगत रूप से निर्देश के कार्यान्वयन की निगरानी करने और समय पर अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

अदालत ने ये आदेश एक जोड़े द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान दिया। याचिकाकर्ताओं ने 11 अक्टूबर, 2023 को इस्लामी शरिया कानून के तहत विवाह किया था। दोनों ने विदेश यात्रा के लिए वीजा जारी करने के लिए कुछ देशों की आवश्यकता के अनुसार, अपने विवाह को पंजीकृत करने की मांग की थी।

मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत हुई शादी

हालांकि, मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत संपन्न विवाहों के लिए एक प्रभावी ऑनलाइन पंजीकरण तंत्र की अनुपस्थिति के कारण, याचिकाकर्ताओं को विशेष विवाह अधिनियम, 1954 के तहत अपने विवाह को पंजीकृत करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

ऑनलाइन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन के सिर्फ दो विकल्प

याचिकाकर्ता की ओर से पेश अधिवक्ता एम सुफियान सिद्दीकी ने कहा कि उनके मुवक्किल को दिल्ली सरकार द्वारा अनिवार्य विवाह पंजीकरण प्रणाली के अधीन किया गया था, जिसमें ऑनलाइन पोर्टल पर केवल दो विकल्प दिए गए थे। हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 या विशेष विवाह अधिनियम, 1954 के तहत पंजीकरण।

अधिवक्ता ने तर्क दिया कि दिल्ली (विवाह का अनिवार्य पंजीकरण) आदेश, 2014 के तहत ऑफलाइन विकल्प या उपयुक्त ऑनलाइन विकल्प की अनुपस्थिति ने याचिकाकर्ताओं को प्रभावी रूप से उनके विश्वास और इरादे के विपरीत एक वैधानिक व्यवस्था में मजबूर कर दिया, जिससे अनुच्छेद 14, 21 और 25 के तहत उनके संवैधानिक अधिकारों का गंभीर उल्लंघन हुआ।

याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ता ने तर्क दिया कि उनके मुवक्किलों पर विशेष विवाह अधिनियम, 1954 लागू नहीं होना चाहिए, और याचिकाकर्ताओं ने मुस्लिम पर्सनल ला के तहत विवाह पंजीकरण के लिए एक प्रभावी ऑनलाइन तंत्र की अनुपस्थिति के कारण, गलती से विशेष विवाह अधिनियम के तहत अपना विवाह पंजीकृत कर लिया था।

हाईकोर्ट ने एनटीए व यूजीसी को जारी किया नोटिस

दिल्ली हाईकोर्ट ने नेट राजनीति विज्ञान के उम्मीदवार अब्दुल वारिश शेख द्वारा दायर याचिका के बाद राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) और अन्य प्रतिवादियों को नोटिस जारी किया है। न्यायमूर्ति पुरुषेंद्र कुमार कौरव की पीठ में हुई सुनवाई में प्रतिवादियों के अधिवक्ता ने नोटिस स्वीकार किए। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई पांच दिसंबर के लिए सूचीबद्ध की है।

दिल्लीवासियों के लिए विधानसभा चुनाव से पहले आखिरी मौका, जल्द निपटा लें यह काम; सिर्फ दो दिन के लिए लगा है शिविर

दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले पात्र लोगों को मतदाता के रूप में नामांकन कराने के लिए दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया। अधिकारियों ने बताया कि शहर भर के सभी मतदान केंद्रों पर शिविर लगाए गए हैं जहां लोग सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक पंजीकरण के लिए जा सकते हैं। शिविर मतदाता सूची के चल रहे विशेष पुनरीक्षण के हिस्से के रूप में आयोजित किए गए।

नई दिल्ली। फरवरी में होने वाले आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले पात्र लोगों को मतदाता के रूप में नामांकन कराने का एक और मौका देते हुए शनिवार को विशेष दो दिवसीय शिविर शुरू हुआ। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) द्वारा जारी एक नोटिस में कहा गया है कि सभी पात्र लोग विशेष शिविरों में मतदाता सूची में अपना नाम पंजीकृत करवा सकते हैं।

अधिकारियों ने बताया कि शहर भर के सभी मतदान केंद्रों पर शिविर लगाए गए हैं, जहां लोग सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक पंजीकरण के लिए जा सकते हैं। शिविर मतदाता सूची के चल रहे विशेष पुनरीक्षण के हिस्से के रूप में आयोजित किए गए हैं। नोटिस में कहा गया है, रदिल्ली के सभी नागरिक जो पहले ही 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके हैं या 1 जनवरी, 2025 को 18 वर्ष की आयु प्राप्त कर रहे हैं, वे इन विशेष शिविरों में फॉर्म-6 में आवेदन कर सकते हैं।"

पहचान पत्र में बदलाव के लिए फॉर्म-8 भरें: नोटिस

इसमें कहा गया है कि कोई भी पात्र नागरिक, जो वर्ष 2025 में किसी भी आगामी तिथि (1 जनवरी से आगे) को या उससे पहले 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला है, वह भी इलेक्टोरल रोल में नाम शामिल करने के लिए अपना आवेदन फॉर्म 6 के माध्यम से दायर कर सकता है। 1 अक्टूबर, 2025 तक 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाले सभी नए आवेदक फॉर्म-6 के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। इसमें कहा गया है कि चुनावी फोटो पहचान पत्र (ईपीआईसी) में सुधार या बदलाव ट्रांसफर फॉर्म -8 के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

एक व्यक्ति दो जगह के मतदाता नहीं हो सकते

इसमें कहा गया है कि एक व्यक्ति एक ही स्थान से मतदाता बन सकता है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 17 और 18 के तहत दो निर्वाचन क्षेत्रों से मतदाता होना दंडनीय अपराध है। लोग फॉर्म-7 में कई प्रविष्टियों को हटाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसमें कहा गया है कि आवेदन ऑनलाइन भी दाखिल किए जा सकते हैं।

दिल्ली में बीजेपी को मिल गई आप की काट

सांसद-विधायक ले रहे केंद्रीय मंत्रियों से मदद; घोषणापत्र पर आया अपडेट

दिल्ली विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए भाजपा दिल्लीवासियों से जुड़े मुद्दों को चिन्हित कर उसके समाधान की रणनीति तैयार कर रही है। इन मुद्दों को संबंधित मंत्रियों और अधिकारियों के सामने उठाकर उसके समाधान की राह तलाश रहे हैं जिससे कि दिल्ली के लोगों को अपने पक्ष में किया जा सके। मंत्रियों से मिले सुझाव के आधार पर चुनाव घोषणा पत्र में मतदाताओं से वादे किए जाएंगे।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखकर भाजपा दिल्लीवासियों से जुड़े मुद्दों को चिन्हित कर उसके समाधान की रणनीति तैयार कर रही है। इन मुद्दों को संबंधित मंत्रियों और अधिकारियों के सामने उठाकर उसके समाधान की राह तलाश रहे हैं, जिससे कि दिल्ली के लोगों को अपने पक्ष में किया जा सके। मंत्रियों से मिले सुझाव के आधार पर चुनाव घोषणा पत्र में मतदाताओं से वादे किए जाएंगे।

भाजपा के सभी सांसद और पदाधिकारी दिल्ली के मुद्दों को लेकर मंत्रियों से मुलाकात कर रहे हैं। पिछले दिनों सभी सांसद व अन्य नेता प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल से मिले थे। उनके सामने अनधिकृत कॉलोनियों में लोगों को उनकी संपत्ति का मालिकाना हक देने, झुग्गी बस्तियों में रहने वालों को पक्का मकान देने, दिल्ली देहात की समस्याओं के समाधान सहित अन्य विषय पर चर्चा की थी। कई सांसद व नेता केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, मनसुख मांडविया से मिले हैं।

अनधिकृत कॉलोनियों और झुग्गियों पर नजर

दिल्ली की बहुत बड़ी आबादी अनधिकृत कॉलोनियों और झुग्गी बस्तियों और दिल्ली देहात में रहती है। राजनीतिक पार्टियां इन्हें अपने साथ जोड़कर चुनावी राह सुगम बनाने के प्रयास में रहती हैं। यही कारण है कि पिछले लोकसभा चुनाव से पहले अनधिकृत कालोनियों में रहने वालों को उनकी संपत्ति का मालिकाना हक देने का वादा किया गया था। इसके लिए वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री उदय योजना की घोषणा की गई थी, परंतु कठिन शर्त व अन्य कारणों से लोगों को इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिला है।

प्रधानमंत्री उदय योजना को लेकर 1.23 लाख आवेदन

पिछले पांच वर्षों में लगभग 1.23 लाख लोगों ने आवेदन किए हैं। इसमें से लगभग 24 हजार लोगों को ही संपत्ति का मालिका हक मिल सका है। दिल्ली के नेताओं ने शहरी विकास मंत्री से इसकी शर्तें सरल करने की मांग की है। झुग्गीवासियों को कठपुतली कालोनी, अशोक नगर में झुग्गीवालों को शीघ्र मकान आवंटित करने की भी मांग की गई है, जिससे कि भाजपा के प्रति उनका विश्वास बढ़ सके।

रामवीर सिंह बिधूड़ी इन मुद्दों पर कर रहे काम

दक्षिणी दिल्ली के सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी शहरी विकास मंत्री व उपराज्यपाल से मिलकर गांवों में लाल डोरे के बाहर की आबादी को नियमित करने, 1947 में पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों के भूखंड व मकान का मालिकाना हक देने, डीडीए मार्केट व आवासीय क्षेत्र में सील की गई दुकानों को डी-सील करने और पुनर्वास कोलनियों में भी मालिकाना हक देने की

लिंक एक्सप्रेस-वे न्यू नोएडा को भी देगा नोएडा एयरपोर्ट से सीधे कनेक्टिविटी, विकास परियोजनाओं के लगेंगे नए पंख

परिवहन विशेष न्यूज

लिंक एक्सप्रेस-वे नोएडा एयरपोर्ट को गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ेगा जिससे न्यू नोएडा और यमुना प्राधिकरण के औद्योगिक क्षेत्रों को सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी। यह विकास परियोजनाओं को गति देगा और माल ढुलाई और यात्रियों के लिए आवागमन को सुविधाजनक बनाएगा। नोएडा एयरपोर्ट को डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर एवं दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से जोड़ने के लिए चोला तक प्रस्तावित 16 किमी लंबे मार्ग से इसे जोड़ने का प्रस्ताव अहम है।

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (Noida International Airport) को गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ने के लिए प्रस्तावित लिंक एक्सप्रेस-वे संरेखण बदलने को यमुना प्राधिकरण ने तीन विकल्प सुझाव उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा, UPIDA) को दिए हैं। नोएडा एयरपोर्ट को डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर एवं दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से जोड़ने के लिए चोला तक प्रस्तावित 16 किमी लंबे मार्ग से इसे जोड़ने का प्रस्ताव अहम है।

इसके साथ ही कार्गो टर्मिनल को यमुना एक्सप्रेस-वे से कनेक्टिविटी के लिए बनने वाली 30 मीटर चौड़ी सड़क और तीसरे विकल्प में पलवल-खुर्जा प्रस्तावित एक्सप्रेस-वे से जोड़ने का विकल्प दिया है। लिंक एक्सप्रेस-वे न्यू नोएडा (New NOIDA) को यीडा (YEIDA) क्षेत्र के साथ नोएडा एयरपोर्ट (Noida Airport) से भी जोड़ेगा। माल की ढुलाई और यात्रियों के लिए लिंक एक्सप्रेस-वे (Link Express Way) आवागमन का काफी सुविधाजनक मार्ग बनेगा।

नोएडा एयरपोर्ट और यमुना एक्सप्रेस-वे होगा कनेक्ट

मेरठ से प्रयागराज तक बन रहे 594 किमी लंबे गंगा एक्सप्रेस-वे (Ganga Expressway) से नोएडा एयरपोर्ट एवं यमुना एक्सप्रेस-वे की कनेक्टिविटी के लिए लिंक एक्सप्रेस-वे प्रस्तावित किया है। यूपीडा ने 79 किमी लंबे लिंक एक्सप्रेस-वे का गंगा एक्सप्रेस-वे के 44 किमी से यमुना एक्सप्रेस-वे के 30 किमी प्वाइंट तक संरेक्षण किया है, लेकिन एमआरओ के लिए अधिगृहीत जमीन से होकर गुजरने पर यमुना प्राधिकर (Yamuna Authority) ने लिंक एक्सप्रेस-वे के संरेखण में बदलाव को तीन विकल्प दिए हैं।

ये हैं तीन विकल्प

पहले विकल्प में चोला तक लिंक एक्सप्रेस-वे व दूसरे विकल्प में तीस मीटर चौड़ी सड़क से जोड़ने पर अधिक जोर है। चोला तक लिंक एक्सप्रेस-वे का संरेखण होने से यीडा के मास्टर प्लान 2041 में नियोजित 75 मीटर चौड़े मार्ग व लाजिस्टक एवं वेयरहाउसिंग सेक्टर को फायदा मिलेगा। यह क्षेत्र भी लिंक एक्सप्रेस-वे के जरिये न्यू नोएडा एवं गंगा एक्सप्रेस-वे से जुड़ जाएगा।

तीस मीटर चौड़ी सड़क से लिंक होने पर कार्गो टर्मिनल व यमुना एक्सप्रेस-वे होकर यात्री टर्मिनल तक पहुंचना आसान हो जाएगा। इसके साथ ही यमुना प्राधिकरण के औद्योगिक सेक्टर 28, 29, 32, व 33 को फायदा होगा। इन सेक्टरों में यमुना प्राधिकरण के महत्वपूर्ण औद्योगिक पार्क (मेडिकल डिवाइस पार्क, अपैरल पार्क, टॉय पार्क, एमएसएमई पार्क, हैंडीक्राफ्ट पार्क) को भी गंगा एक्सप्रेस-वे की सीधे कनेक्टिविटी मिल जाएगी।

न्यू नोएडा के तीन व यमुना प्राधिकरण के 17 गांवों से होकर गुजरेगा लिंक एक्सप्रेस-वे

लिंक एक्सप्रेस-वे बुलंदशहर, गौतमबुद्ध नगर के 68 गांवों से होकर गुजरेगा। बुलंदशहर के स्याना क्षेत्र से गुजरते हुए यह न्यू नोएडा होकर यीडा क्षेत्र में प्रवेश करेगा। न्यू नोएडा में शामिल तीन गांव व यीडा क्षेत्र के 17 अधिसूचित गांव इसके मौजूदा संरेखण में आ रहे हैं।

लिंक एक्सप्रेस-वे बनने से गंगा एक्सप्रेस-वे से जुड़े पश्चिम उत्तर प्रदेश के जिलों के अलावा बुलंदशहर का स्याना क्षेत्र, न्यू नोएडा व यीडा क्षेत्र की कनेक्टिविटी बेहतर हो जाएगी। न्यू नोएडा को कनेक्टिविटी देने वाला लिंक एक्सप्रेस-वे तीसरा होगा। ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे (Eastern Peripheral Expressway) और एनएच 34 की भी न्यू नोएडा से कनेक्टिविटी है।

लिंक एक्सप्रेस-वे के लिए यूपीडा को तीन विकल्प दिए गए हैं। चोला से जुड़ने से प्राधिकरण क्षेत्र के औद्योगिक सेक्टरों को भी इसका फायदा मिलेगा। चोला से यीडा क्षेत्र में रेलवे व सड़क कनेक्टिविटी मास्टर प्लान 2041 में प्रस्तावित की गई है। -डॉ. अरुणवीर सिंह, मुख्य कार्यपालक अधिकारी यमुना प्राधिकरण।

खुशखबरी! गंगा एक्सप्रेस-वे से कनेक्ट होगा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, यूपी के 22 जिलों को होगा लाभ

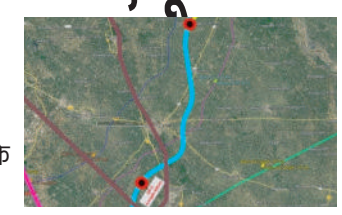

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को 83 किमी लंबे लिंक एक्सप्रेस-वे के जरिये गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जाएगा। इसके जुड़ जाने से उत्तर प्रदेश के 22 जिले के लोगों के लिए को राहत मिलेगी। उन्हें एयरपोर्ट आने-जाने में आसानी होगी। इसके लिए यमुना प्राधिकरण ने उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण यानी यूपीडा को पत्र लिखा है। इस लेख के माध्यम से जानें पूरी खबर।

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को 83 किमी लंबे लिंक एक्सप्रेस-वे के जरिये गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जाएगा। इस मार्ग का निर्माण होने से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद, मेरठ और बुलंदशहर सहित 22 जिलों के लोगों को एयरपोर्ट पहुंचने के लिए सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी।

इसके साथ ही उत्तराखंड के लोगों को भी एयरपोर्ट पहुंचने में लाभ मिलेगा। लिंक एक्सप्रेस-वे (Link-Expressway) के लिए भूमि का सर्वे कर लिया गया है। सर्वे में लिंक एक्सप्रेस वे के लिए तैयार संरेक्षण (एलाइन्मेंट) एयरपोर्ट के विस्तार के लिए अधिगृहीत जमीन से गुजर रहा है।

जेवर में बन रहा देश का सबसे बड़े एक्सप्रेस-वे

यमुना प्राधिकरण (Yamuna Authority) ने उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण को पत्र भेजकर इससे अवगत कराया है। प्राधिकरण के पत्र के बाद लिंक एक्सप्रेस वे के एलाइन्मेंट में बदलाव किया जा सकता है। जेवर में बन रहे देश के सबसे बड़े एक्सप्रेस-वे को सड़क कनेक्टिविटी के लिए विभिन्न विकल्प तैयार हो रहे हैं।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे (Delhi-Mumbai Expressway) से कनेक्टिविटी के लिए 31 किमी लंबा लिंक एक्सप्रेस से बन रहा है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग इसका निर्माण कर रहा है। दिसंबर तक इसके पूरा होने की संभावना है। मेरठ से प्रयागराज तक बन रहे गंगा एक्सप्रेस-वे (Ganga Expressway) से नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को जोड़ने के लिए लिंक एक्सप्रेस वे बनाया जाएगा।

करीब चार हजार करोड़ लागत, एक हजार हेक्टेयर जमीन की जरूरत

उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) ने लिंक एक्सप्रेस से के लिए रेडिकॉन इंडिया प्रा. से अध्ययन व सर्वे कराया है। इसके तहत गंगा एक्सप्रेस-वे के चैनेज 44 से लिंक एक्सप्रेस-वे शुरू होकर यमुना एक्सप्रेस-वे के चैनेज 30 पर जुड़ेगा।

83 किमी लंबा एक्सप्रेस-वे गौतमबुद्ध नगर और बुलंदशहर के 68 गांवों से होकर प्रस्तावित किया गया है। इस पर करीब चार हजार करोड़ लागत और एक हजार हे. जमीन की जरूरत होगी।

यूपीडा (UPEIDA) के अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री हरि प्रताप शाही ने यमुना प्राधिकरण को पत्र भेजकर लिंक एक्सप्रेस वे के संरेक्षण में आने वाली जमीन का मिलान का आग्रह किया था, ताकि यमुना प्राधिकरण की किसी परियोजना पर इसका विपरीत असर न पड़े। यमुना एक्सप्रेस वे पर जहां लिंक एक्सप्रेस वे जुड़ रहा है। वह क्षेत्र नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के विस्तारीकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सीएम सैनी ने गुरुग्राम नगर निगम के क्लर्क को किया सस्पेंड, रिश्वत लेने के मामले में हुई कार्रवाई

हरियाणा के गुरुग्राम में मुख्यमंत्री स्वामित्व योजना के तहत दुकान के मालिकाना हक के लिए 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगने के मामले में एक क्लर्क को सस्पेंड कर दिया गया है।

गुरुग्राम। मुख्यमंत्री स्वामित्व योजना का लाभ देने में देरी करने और 50 हजार रुपये की रिश्वत मांगने के मामले में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने नगर निगम गुरुग्राम के एक क्लर्क को सस्पेंड कर दिया है। इसके अलावा गुरुग्राम नगर निगम के एक संयुक्त आयुक्त अखिलेश यादव का 15 दिन का वेतन काटने के आदेश दिए हैं। गुरुग्राम निवासी शिकायतकर्ता नरेंद्र कुमार ने इसकी शिकायत सीएम डैशबोर्ड सेल पर की थी। मुख्यमंत्री के आदेश के बाद गुरुग्राम निगमायुक्त ने देर शाम क्लर्क को सस्पेंड करने के आदेश जारी कर दिए हैं। शिकायतकर्ता ने शिकायत में बताया था कि मुख्यमंत्री स्वामित्व योजना के तहत भीमनगर स्थित नगर निगम की एक दुकान के मालिकाना हक के लिए नगर निगम में आवेदन किया था। शिकायतकर्ता का आरोप है कि टैक्स ब्रांच के क्लर्क संदीप ने दुकान की रजिस्ट्री करवाने के लिए 50 हजार रुपये की डिमांड की थी और पैसे नहीं देने पर आवेदन को लटकाए रखा। सीएम डैशबोर्ड पर शिकायत मिलने के बाद सीएम ने तुरंत क्लर्क को सस्पेंड कर दिया। फिलहाल क्लर्क निगम के जोनल टैक्सेशन आफिसर (मुख्यालय) के कार्यालय में कार्यरत है।

पहले भी विवादों में रही है टैक्स ब्रांच

एक जून, 2021 की मुख्यमंत्री शहरी निकाय स्वामित्व योजना के तहत बीस साल यानी 31 दिसंबर, 2020 तक निगम की दुकानों पर काबिज किरायेदरों की दुकानों का मालिकाना हक दिया जाना था। इसके लिए गुरुग्राम निगम ने किरायेदारों से आवेदन मांग थे। वर्ष 2022 में पांच से से सात लाख रुपये लेकर रजिस्ट्री कराने और घोटाला करने से संबंधित एक शिकायत शहरी स्थानीय निकाय विभाग को भेजी गई थी।

विभाग को निगमायुक्त कार्यालय ने रिपोर्ट भेजी थी

10 मई 2022 को हुई शिकायत के अनुसार तत्कालीन जेडटीओ (जोनल टैक्सेशन ऑफिसर) पर योजना में अनियमितता बरतने के आरोप लगे थे और आरोप यह भी था कि उन्होंने निगम की भीमनगर मार्केट की दुकान की रजिस्ट्री नियम विरुद्ध अपने बेटे के नाम करवा दी। इस संबंध में नगर निगम की ओर से जेडटी ओ के विरुद्ध कार्रवाई के लिए शहरी स्थानीय निकाय विभाग को निगमायुक्त कार्यालय ने रिपोर्ट भेजी थी।

गाजियाबाद में इमरजेंसी में पहुंचे 148 मरीज, दो लोगों की हो गई मौत; सामने आई ये वजह

परिवहन विशेष न्यूज

बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण गाजियाबाद के सरकारी और निजी अस्पतालों में आंखों में जलन खांसी-जुकाम और सांस के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। जिला एमएमजी अस्पताल की ओपीडी में शुक्रवार को पहुंचे 2085 मरीजों में से 411 सांस के मरीज थे। इनमें से 73 मरीजों का चेस्ट एक्स-रे कराया गया। बुखार के 426 मरीज पहुंचे। बीमार बच्चों की संख्या 298 रही।

गाजियाबाद। वायु प्रदूषण बढ़ने पर सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों आंखों में जलन, खांसी-जुकाम और सांस के मरीज बढ़ रहे हैं। शुक्रवार को जिला एमएमजी अस्पताल की ओपीडी में पहुंचे 2085 मरीजों में सांस के 411 मरीज पहुंचे। इनमें से 73 मरीजों का चेस्ट एक्स-रे कराया गया। बुखार के 426 मरीज पहुंचे। बीमार बच्चों की संख्या 298 रही।

कार्यवाहक सीएमएस डॉ. संतराम वर्मा ने बताया कि इमरजेंसी में पहुंचे 148 मरीजों में किशोर समेत दो को मृत घोषित किया गया। इनमें 16 वर्षीय किशोर धर्मेन्द्र कुमार और 62 वर्षीय धनसिंह शामिल हैं। दोनों को बुखार और सांस लेने में परेशानी होने पर मृतावस्था में इमरजेंसी में लाया गया था। दोनों शवों को संबंधित के स्वजन को सौंप दिया गया।

संयुक्त अस्पताल की ओपीडी में 885 मरीज पहुंचे

ओपीडी में पहुंचे मरीजों में सबसे अधिक 1036 महिला और 751 पुरुष मरीज शामिल है। इनमें अधिकांश खांसी-जुकाम, बुखार और आंखों में जलन की शिकायत पर अस्पताल पहुंचे। भर्ती मरीजों की संख्या 101 है। संयुक्त अस्पताल की ओपीडी में 885 मरीज पहुंचे। इनमें 100 बच्चे शामिल हैं। कुत्ता और बंदर के काटने पर 49 बच्चों समेत 319 लोगों ने एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है।

25 दिन बाद बच्ची की अस्पताल से हुई छुट्टी

वेव सिटी थाना क्षेत्र में 11 अक्टूबर को लावारिश हालत में मिली बच्ची की स्वस्थ होने के बाद अस्पताल से छुट्टी कर दी गई है। प्रबंधन द्वारा पुलिस एवं अन्य सक्षम अधिकारियों को इस संबंध में लिखित में अवगत कराया था। जिला महिला अस्पताल की सीएमएस डॉ. अल्का शर्मा ने बताया कि 12 अक्टूबर को अस्पताल में भर्ती गई लावारिस बच्ची को पुलिस एवं बाल कल्याण समिति को सौंप दिया गया है। भर्ती के समय बच्ची का वजन तीन किलो था। उसका वजन अब 3.46 किलोग्राम हो गया है। बच्ची का स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक है। चिकित्सकों की निगरानी में बच्ची एसएनसीयू में भर्ती रही।

सीएम रहे शहर में, ओपीडी हुई प्रभावित

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को शहर में रहें। सीएम की वीआइपी ड्यूटी में अधिकांश चिकित्सक, फार्मासिस्ट, एंबुलेंस और एएलएस की ड्यूटी लगने से ओपीडी के साथ इमरजेंसी सेवाएं प्रभावित रही। कई चिकित्सक तो सुबह से ही ड्यूटी के लिए चले गए। प्रशिक्षु चिकित्सकों ने मरीज देखे। इससे जिला एमएमजी अस्पताल और संयुक्त अस्पताल की ओपीडी और इमरजेंसी सेवाएं अधिक प्रभावित हुई। शुक्रवार को चिकित्सा विभाग के अधिकारी भी पूरे दिन सीएम के आगमन की तैयारियों में जुटे रहे। नेहरूनगर में एक प्राइवेट हास्पिटल में सेफ हाउस बनाया गया था। शाम को चले जाने के बाद अधिकारियों ने राहत की सांस ली।

भारत के रतन का जाना...

नरेंद्र मोदी

रतन टाटा जी, भारतीय उद्यमशीलता की बेहतरीन परंपराओं के प्रतीक थे। वो विश्वसनीयता, उत्कृष्टता और बेहतरीन सेवा जैसे मूल्यों के अडिग प्रतिनिधि थे। उनके नेतृत्व में, टाटा समूह दुनिया भर में सम्मान, ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रतीक बनकर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा।

आज श्री रतन टाटा जी के निधन को एक महीना हो रहा है। पिछले महीने आज के ही दिन जब मुझे उनके गुजरने की खबर मिली, तो मैं उस समय आसियान समिट के लिए निकलने की तैयारी में था। रतन टाटा जी के हमसे दूर चले जाने की वेदना अब भी मन में है। इस पीड़ा को भुला पाना आसान नहीं है। रतन टाटा जी के तौर पर भारत ने अपने एक महान सपूत को खो दिया है...एक अमूल्य रत्न को खो दिया है।

आज भी शहरों, कस्बों से लेकर गांवों तक, लोग उनकी कमी को गहराई से महसूस कर रहे हैं। हम सबका ये दुख साझा है। चाहे कोई उद्योगपति हो, उभरता हुआ उद्यमी हो या कोई प्रोफेशनल हो, हर किसी को उनके निधन से दुख हुआ है। पर्यावरण रक्षा से जुड़े लोग...समाज सेवा से जुड़े लोग भी उनके निधन से उतने ही दुखी हैं। और ये दुख हम सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में महसूस कर रहे हैं।

युवाओं के लिए, श्री रतन टाटा एक प्रेरणास्रोत थे। उनका जीवन, उनका व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि कोई सपना ऐसा नहीं जिसे पूरा ना किया जा सके, कोई लक्ष्य ऐसा नहीं जिसे प्राप्त नहीं किया जा सके। रतन टाटा जी ने सबको सिखाया है कि विनम्र स्वभाव के साथ, दूसरों की मदद करते हुए भी सफलता पाई जा सकती है।

रतन टाटा जी, भारतीय उद्यमशीलता की बेहतरीन परंपराओं के प्रतीक थे। वो विश्वसनीयता, उत्कृष्टता और बेहतरीन सेवा जैसे मूल्यों के अडिग प्रतिनिधि थे। उनके नेतृत्व में, टाटा समूह दुनिया भर में सम्मान, ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रतीक बनकर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। इसके बावजूद, उन्होंने अपनी उपलब्धियों को पूरी विनम्रता और सहजता के साथ स्वीकार किया।

दूसरों के सपनों का खुलकर समर्थन करना, दूसरों के सपने पूरा करने में सहयोग करना, ये श्री रतन टाटा के सबसे शानदार गुणों में से एक था। हाल के वर्षों में, वो भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का मार्गदर्शन करने और भविष्य की संभावनाओं से भरे उद्यमों में निवेश करने के लिए जाने गए। उन्होंने युवा आंत्रप्रेन्योर की आशाओं और आकांक्षाओं को समझा, साथ ही भारत के भविष्य को आकार देने की उनकी क्षमता को पहचाना।

भारत के युवाओं के प्रयासों का समर्थन करके, उन्होंने नए सपने देखने वाली नई पीढ़ी को जोखिम लेने और सीमाओं से परे जाने का हौसला दिया। उनके इस कदम ने भारत में इनोवेशन और आंत्रप्रेन्योरशिप की संस्कृति विकसित करने में बड़ी मदद की है। आने वाले दशकों में हम भारत पर इसका सकारात्मक प्रभाव जरूर देखेंगे।

रतन टाटा जी ने हमेशा बेहतरीन क्वालिटी के प्रॉडक्ट...बेहतरीन क्वालिटी की सर्विस पर जोर दिया और भारतीय उद्यमों को ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करने का रास्ता दिखाया। आज जब भारत 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तो हम ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करते हुए ही दुनिया में अपना परचम लहरा सकते हैं। मुझे आशा है कि उनका ये विजन हमारे देश की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और भारत वर्ल्ड क्लास क्वालिटी के लिए अपनी पहचान मजबूत करेगा।

रतन टाटा जी की महानता बोर्डरूम या सहयोगियों की मदद करने तक ही सीमित नहीं थी। सभी जीव-जंतुओं के प्रति उनके मन में करुणा थी। जानवरों के प्रति उनका गहरा प्रेम जगजाहिर था और वे पशुओं के कल्याण पर केन्द्रित हर प्रयास को बढ़ावा देते थे। वो अक्सर अपने डॉग्स की तस्वीरें साझा करते थे, जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। मुझे याद है, जब रतन टाटा जी को लोग आखिरी विदाई देने के लिए उमड़ रहे थे...तो उनका डॉग 'गोवा' भी वहां नम आंखों के साथ पहुंचा था।

रतन टाटा जी का जीवन इस बात की याद दिलाता है कि लीडरशिप का आकलन केवल उपलब्धियों से ही नहीं किया जाता है, बल्कि सबसे कमजोर लोगों की देखभाल करने की उसकी क्षमता से भी किया जाता है।

रतन टाटा जी ने हमेशा, नेशन फर्स्ट की भावना को सर्वोपरि रखा। 26/11 के आतंकवादी हमलों के बाद उनके द्वारा मुंबई के प्रतिष्ठित ताज होटल को पूरी तत्परता के साथ फिर से खोलना, इस राष्ट्र के एकजुट होकर उठ खड़े होने का प्रतीक था। उनके इस कदम ने बड़ा संदेश दिया कि – भारत रुकेगा नहीं...भारत निडर है और आतंकवाद के सामने झुकने से इनकार करता है।

व्यक्तिगत तौर पर, मुझे पिछले कुछ दशकों में उन्हें बेहद करीब से जानने का सौभाग्य मिला। हमने गुजरात में साथ मिलकर काम किया। वहां उनकी कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर निवेश किया गया। इनमें कई ऐसी परियोजनाएं भी शामिल थीं, जिसे लेकर वे बेहद भावुक थे।

जब मैं केन्द्र सरकार में आया, तो हमारी घनिष्ठ बातचीत जारी रही और वो हमारे राष्ट्र-निर्माण के प्रयासों में एक प्रतिबद्ध भागीदार बने रहे। स्वच्छ भारत मिशन के प्रति श्री रतन टाटा का उत्साह विशेष रूप से मेरे दिल को छू गया था। वह इस जन आंदोलन के मुखर समर्थक थे। वह इस बात को समझते थे कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतें भारत की प्रगति की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं। अक्टूबर की शुरुआत में स्वच्छ भारत मिशन की दसवीं वर्षगांठ के लिए उनका वीडियो संदेश मुझे अभी भी याद है। यह वीडियो संदेश एक तरह से उनकी अंतिम सार्वजनिक उपस्थितियों में से एक रहा है।

कैंसर के खिलाफ लड़ाई एक और ऐसा लक्ष्य था, जो उनके दिल के करीब था। मुझे दो साल पहले असम का वो कार्यक्रम याद आता है, जहां हमने संयुक्त रूप से राज्य में विभिन्न कैंसर अस्पतालों का उद्घाटन किया था। उस अवसर पर अपने संबोधन में, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वो अपने जीवन के आखिरी वर्षों को हेल्थ सेक्टर को समर्पित करना चाहते हैं। स्वास्थ्य सेवा एवं कैंसर संबंधी देखभाल को सुलभ और किफायती बनाने के उनके प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि वो बीमारियों से जूझ रहे लोगों के प्रति कितनी गहरी संवेदना रखते थे।

मैं रतन टाटा जी को एक विद्वान व्यक्ति के रूप में भी याद करता हूं - वह अक्सर मुझे विभिन्न मुद्दों पर लिखा करते थे, चाहे वह शासन से जुड़े मामले हों, किसी काम की सराहना करना हो या फिर चुनाव में जीत के बाद बधाई सन्देश भेजना हो।

अभी कुछ सप्ताह पहले, मैं स्पेन सरकार के राष्ट्रपति श्री पेड्रो सान्चेज के साथ वडोदरा में था और हमने संयुक्त रूप से एक विमान फैक्ट्री का उद्घाटन किया। इस फैक्ट्री में सी-295 विमान भारत में बनाए जाएंगे। श्री रतन टाटा ने ही इस पर काम शुरू किया था। उस समय मुझे श्री रतन टाटा की बहुत कमी महसूस हुई।

आज जब हम उन्हें याद कर रहे हैं, तो हमें उस समाज को भी याद रखना है जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। जहां व्यापार, अच्छे कार्यों के लिए एक शक्ति के रूप में काम करे, जहां प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को महत्व दिया जाए और जहां प्रगति का आकलन सभी के कल्याण और खुशी के आधार पर किया जाए। रतन टाटा जी आज भी उन जिंदगियों और सपनों में जीवित हैं, जिन्हें उन्होंने सहारा दिया और जिनके सपनों को साकार किया। भारत को एक बेहतर, सहृदय और उम्मीदों से भरी भूमि बनाने के लिए आने वाली पीढ़ियां उनकी सदैव आभारी रहेंगी।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV Drive the Future

चंडीगढ़ में 103 इमारतों पर लगेगा सोलर पैनल

परिवहन विशेष न्यूज

चंडीगढ़ नगर निगम ने शहर की विभिन्न इमारतों पर सौर पैनल लगाने के लिए चंडीगढ़ अक्षय ऊर्जा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संवर्धन सोसाइटी (क्रेस्ट) को पत्र लिखा है। इस परियोजना के तहत नगर निगम की लगभग 103 गैर-आवासीय इमारतों पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने की योजना है, जिससे 2.6 मेगावाट बिजली उत्पादन की उम्मीद जताई जा रही है।

नगर निगम आयुक्त अमित कुमार द्वारा क्रेस्ट को भेजे गए पत्र में इमारतों की विस्तृत सूची दी गई है, जहां सौर पैनल लगाए जा सकते हैं। उनका कहना है कि इस परियोजना के माध्यम से चंडीगढ़ प्रशासन को अपने सौर ऊर्जा उत्पादन लक्ष्य को पूरा करने में मदद मिलेगी। इस योजना को नगर निगम के बजट में मंजूरी मिल चुकी थी, लेकिन वित्तीय समस्याओं के कारण इसकी प्रगति में बाधा आई है।

पत्र में कहा गया है, "नगर निगम ने 103 गैर-आवासीय भवनों में सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना को मंजूरी दी थी, और इस परियोजना के लिए 100 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है।"

नगर निगम के विभाग ने पहले ही कुछ इमारतों पर सौर पैनल लगाए हैं, जैसे सेक्टर 39 के जल कार्यों में पानी की टंकी और गौशाला में, लेकिन वित्तीय संकट के कारण कई विकास कार्य रुक गए हैं। इस परियोजना का उद्देश्य चंडीगढ़ के नवीकरणीय ऊर्जा दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना है, जिससे न सिर्फ बिजली की बचत होगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान मिलेगा।

नगर निगम ने पहले इस परियोजना के लिए दो बार निविदा जारी की थी, लेकिन विभिन्न समस्याओं और तकनीकी कारणों से उचित बोलीदाता प्राप्त नहीं हो सका। अब नगर निगम ने क्रेस्ट से इस परियोजना को जल्द से जल्द अमल में लाने का आग्रह किया है।

मारुति सुजुकी और एचएसबीसी इंडिया ने डीलर इन्वेंट्री फंडिंग के लिए की साझेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

भारत के ऑटोमोटिव उद्योग में अग्रणी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने अपने डीलरशिप के लिए इन्वेंट्री फंडिंग विकल्पों को बढ़ाने के लिए हांगकांग और शंघाई बैंकिंग कॉरपोरेशन इंडिया (एचएसबीसी इंडिया) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस नई साझेदारी का उद्देश्य देश भर में 4,000 से अधिक मारुति सुजुकी बिक्री आउटलेट्स को उनकी कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यापक इन्वेंट्री फाइनेंसिंग समाधान प्रदान करके सहायता प्रदान करना है।

इन्वेंटरी फंडिंग से तात्पर्य एक वित्तीय व्यवस्था से है, जिसमें एक व्यवसाय, जैसे कि डीलर या रिटेलर, इन्वेंट्री की खरीद को वित्तपोषित करने में मदद करने के लिए किसी वित्तीय संस्थान जैसे बैंक से ऋण या क्रेडिट लाइन प्राप्त करता है। यह फंडिंग व्यवसाय को अपनी कार्यशील पूंजी को कम किए बिना ग्राहकों की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त स्टॉक स्तर बनाए रखने में मदद करती है।

इस सहमति पत्र पर दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए, जिनमें मार्केटिंग और बिक्री के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी पार्थो बनर्जी, एलाइड बिजनेस के उपाध्यक्ष कमल महत्ता और मारुति सुजुकी फाइनेंस एंड ड्राइविंग स्कूल के महाप्रबंधक विशाल शर्मा शामिल थे। एचएसबीसी इंडिया का प्रतिनिधित्व सीईओ हितेंद्र दवे, कमर्शियल बैंकिंग के प्रमुख अजय शर्मा, ग्लोबल बैंकिंग के प्रमुख अमिताभ मल्होत्रा, बिजनेस बैंकिंग के कंट्री हेड गौरव सहगल और ग्लोबल ट्रेड सॉल्यूशंस की प्रमुख रूना बक्सी ने किया।

पार्थो बनर्जी ने कहा, ₹हम अपने डीलरों को ग्राहकों और बाजार की बदलती जरूरतों के अनुसार उनकी तत्परता सुनिश्चित करने में सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एचएसबीसी इंडिया के साथ हमारा सहयोग हमारे डीलर भागीदारों के लिए इन्वेंट्री फंडिंग के लिए अभिनव वित्तपोषण समाधानों पर केंद्रित होगा। यह रणनीतिक गठबंधन एमएसआईएल और एचएसबीसी इंडिया की संयुक्त ताकत का लाभ उठाकर हमारे डीलर भागीदारों के लिए व्यापक कार्यशील पूंजी समाधान प्रदान करेगा।₹

एचएसबीसी इंडिया के अजय शर्मा ने कहा, ₹एचएसबीसी की कारोबारी गतिशीलता और डीलरों की बढ़ती जरूरतों की गहरी समझ तथा इसके अनुरूप उत्पाद पेशकश के कारण यह डीलरों को उनके कारोबारी विकास के हर चरण में सहयोग देने में सक्षम होगा।"

जापानी ऑटोमोबाइल निर्माता सुजुकी की सहायक कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड देश भर में डीलरशिप के विशाल नेटवर्क के साथ भारत के ऑटोमोटिव बाजार में एक प्रमुख शक्ति रही है। एचएसबीसी इंडिया के साथ कंपनी का सहयोग अपने डीलरशिप भागीदारों को वित्तीय लचीलापन प्रदान करने, इन्वेंट्री को प्रबंधित करने और ग्राहकों की बदलती मांगों को प्रभावी ढंग से पूरा करने की उनकी क्षमता को बढ़ाने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

एचएसबीसी इंडिया का पोर्टफोलियो कॉर्पोरेट ऋण, खुदरा बैंकिंग, धन प्रबंधन और व्यापार वित्त तक फैला हुआ है, जिससे यह ऑटोमोटिव क्षेत्र और इसके संबद्ध व्यवसायों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित है।

मंथली बेसिस पर अक्टूबर में दर्ज हुई बढ़ोतरी, एमजी, महिंद्रा बीवाईडी की ईवी को ग्राहकों ने किया पसंद

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में कई तरह की तकनीक वाले वाहनों की बिक्री की जाती है। जिनमें पेट्रोल डीजल और सीएनजी कारों के साथ EV भी शामिल हैं। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक मई 2024 के दौरान कुल कितनी कारों की बिक्री हुई है। किस कंपनी ने कितनी Electric Cars की बिक्री बीते महीने में की है।

नईदिल्ली। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन से मिली जानकारी के मुताबिक बीते महीने देशभर में अन्य ईंधन वाली कारों के साथ ही Electric Cars सेगमेंट में भी वाहनों की बिक्री हुई है। किस कंपनी की ओर से October 2024 के दौरान कितनी इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री की गई है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

कितनी हुई बिक्री

फाडा की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में October 2024 के दौरान कुल 10609 यूनिट्स इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसमें 39.12 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मंथली बेसिस पर भी बीते महीने में करीब 80.61 फीसदी की बिक्री में बढ़ोतरी हुई है। जबकि September 2024 में देशभर में 5874 यूनिट्स इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री हुई थी। October 2023 के दौरान यह संख्या 7626 यूनिट्स थी।

Tata Motors EV

टाटा मोटर्स की ओर से October 2024 के दौरान सबसे ज्यादा इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री की गई। कंपनी की ओर से बीते महीने में कुल 6152 यूनिट्स की बिक्री की गई। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी को 9.90 फीसदी की ग्रोथ मिली। लेकिन मंथली बेसिस पर ग्रोथ 69.60 फीसदी रही है। टाटा मोटर्स के पोर्टफोलियो में इलेक्ट्रिक कारों के तौर पर टियागो, पंच, नेक्सन, टिगोर शामिल हैं।

MG Motors

ब्रिटिश कार निर्माता एमजी की ओर से भी भारतीय बाजार में कॉमेट, जेडएस ईवी और विंडसर ईवी को ऑफर किया जाता है। बीते महीने कंपनी ने कुल 2530 यूनिट्स इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री की। बिक्री के मामले में एमजी मोटर्स टाटा के बाद दूसरे नंबर पर रही। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी ने 168.01 फीसदी की बढ़त हासिल की है। बीते साल कंपनी ने सिर्फ 944 यूनिट्स की बिक्री की थी।

Mahindra

महिंद्रा की XUV400 भी इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर भारतीय बाजार में ऑफर की जाती है। कंपनी की इकलौती इलेक्ट्रिक एसयूवी की October 2024 के दौरान 907 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि बीते साल October महीने में इस एसयूवी की 277 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

BYD

चीन की इलेक्ट्रिक कार कंपनी बीवाईडी ने भी October 2024 के दौरान भारतीय बाजार में 363 इलेक्ट्रिक यूनिट्स की बिक्री की है। कंपनी ने पिछले साल इसी अवधि में 144 यूनिट्स की बिक्री की थी।

हरदोई के जिलाधिकारी ने सोलर प्लांट की स्थापना के लिए किया संवाद - और कहा इससे पर्यावरण संरक्षण होगा व बिजली की होगी बचत

परिवहन विशेष न्यूज

हरदोई के रसखान प्रेक्षागृह में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में सोलर पावर प्लांट स्थापना के सम्बन्ध में बैठक हुई। बैठक के मुख्य अतिथि सदस्य विधान परिषद अवनीश कुमार सिंह रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि योजना के क्रियान्वयन में जिलाधिकारी की विशेष रूचि अतुलनीय है।

प्रधानमंत्री के इस अभियान से जुड़कर उन्हें ख़ुशी हो रही है। नई ऊर्जा नीति के अनुसार हम अपनी अतिरिक्त बिजली बेंच सकते हैं। सौर ऊर्जा के उत्पादन से हम खर्च और पर्यावरण दोनों बचाते हैं और इससे लम्बे समय तक लाभ मिलता है। उन्होंने कहा कि वह और उद्योग प्रतिनिधि विद्यालयों का सहयोग करने के लिए तैयार हैं। सभी विद्यालय इस दिशा में पहल करें। उन्होंने हाथ खड़े करवाकर विद्यालयों की सहमति ली। उन्होंने कहा कि आगे चलकर वह प्रत्येक विद्यालय में कम से कम एक स्मार्ट क्लास की स्थापना के लिए प्रयास करेंगे।

जिलाधिकारी ने कहा कि सभी माध्यमिक विद्यालयों में सोलर पावर प्लांट लगवाने के प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने सदस्य विधान परिषद को अपनी निधि से 1 करोड़ रूपये देने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने उद्योगों के प्रतिनिधियों से संवाद किया तथा उनके सुझाव लिए। जिला विद्यालय निरीक्षक ने कहा कि जनपद के अधिक से अधिक माध्यमिक विद्यालयों में सोलर प्लांट लगवाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इससे पर्यावरण संरक्षण होगा व बिजली की बचत होगी।

सदस्य विधान परिषद अवनीश सिंह का सोलर पावर प्लांट की स्थापना में अमूल्य योगदान रहा है। उपायुक्त उद्योग केन्द्र एचपी सिंह ने उद्योग प्रतिनिधियों से सीएसआर फंड के माध्यम से सहयोग करने का अनुरोध किया। पीओ नेडा खुर्शीद फारुख ने योजना के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि जनपद हरदोई को 20 हजार का लक्ष्य पीएम सूर्यघर योजना के अंतर्गत दिया गया है। विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने भी बैठक में अपने सुझाव रखे। इस अवसर पर एक्सईएन विद्युत सूर्य कुमार, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार, उद्योग प्रतिनिधि व विद्यालयों के प्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे।

हीरो मोटोकॉर्प 2025 तक लॉन्च करेगी यूके और यूरोप में विडा ब्रांड

परिवहन विशेष न्यूज

हीरो मोटोकॉर्प 2025 की दूसरी छमाही में विडा ब्रांड के साथ यूनाइटेड किंगडम और यूरोप में विस्तार करने का इरादा रखता है। यह व्यवसाय यूनाइटेड किंगडम और यूरोप में शुरू होगा, जिसमें यूरोपीय सवारों के अनुकूल मोटरसाइकिलों का तैयार स्टॉक होगा। विडा जेड यूनाइटेड किंगडम और यूरोप में पहला उत्पाद होगा, जबकि उच्च क्षमता वाली प्रीमियम आंतरिक दहन इंजन मोटरसाइकिल दूसरा उत्पाद होगा।

हीरो मोटोकॉर्प का वर्तमान में जर्मनी में एक प्रौद्योगिकी केंद्र है जिसे टीसीजी के नाम से जाना जाता है, इसने इटली, पेल्पी इंटरनेशनल एसआरएल में वितरक नियुक्त किए हैं, तथा स्पेन, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम में साझेदारों के साथ वाणिज्यिक संघ बनाए हैं।

हीरो मोटोकॉर्प के इलेक्ट्रिक वाहन पोर्टफोलियो में केवल एक उत्पाद विडा वी1 है, जो अब देश भर के 100 शहरों और 150 डीलरों के पास उपलब्ध है। इलेक्ट्रिक कार बाजार में बड़ी हिस्सेदारी हासिल करने के प्रयास में व्यवसाय इस

वित्तीय वर्ष के अंत तक भारत में चार इलेक्ट्रिक वाहन लॉन्च करने का इरादा रखता है। ऑटोकार प्रोफेशनल का कहना है कि निर्माता का लक्ष्य 2025-2026 मॉडल वर्ष में ज़ीरो मोटर्स सहयोग के तहत चार मॉडल और विडा ब्रांड के तहत छह मॉडल पेश करना है।

हीरो मोटोकॉर्प वैश्विक अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव के बावजूद वैश्विक व्यापार और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में महत्वपूर्ण संभावनाएं देखता है और इसे भविष्य के लिए एक प्रमुख राजस्व चालक के रूप में देखता है। कंपनी की 48 देशों में उपस्थिति है और वित्त वर्ष 2024 में इसके 37,456 करोड़ रुपये के राजस्व में निर्यात का हिस्सा 3.9 प्रतिशत था।

स्टर्लिंग टूल्स और जीएलवीएसी स्थानीय उच्च-वोल्टेज ईवी घटकों के लिए हुए एकजुट

परिवहन विशेष न्यूज

स्टर्लिंग टूल्स लिमिटेड ने भारत में इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों के लिए आवश्यक उच्च-वोल्टेज घटकों के निर्माण के लिए चीन की कुनशान जीएलवीएसी युआनटोंग न्यू एनर्जी टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड (जीएलवीएसी वाईटी) के साथ साझेदारी की है। अपनी सहायक कंपनी स्टर्लिंग टेक-मोबिलिटी लिमिटेड के माध्यम से, यह साझेदारी हाई वोल्टेज डायरेक्ट करंट (एचवीडीसी) कॉन्टैक्टर्स और रिले के उत्पादन को स्थानीय बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगी, जो ईवी सिस्टम में करंट फ्लो को सुरक्षित रूप से प्रबंधित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

यह सहयोग भारत की "मेक इन इंडिया" और आत्मनिर्भर भारत पहल का समर्थन करता है, जिसमें स्टर्लिंग टूल्स ने बेंगलुरु में एक नई विनिर्माण सुविधा में 40 करोड़ रुपये के निवेश की योजना बनाई है। उद्यम का लक्ष्य वित्त वर्ष 30 तक लगभग 250 करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न करना है, जिससे भारतीय ओईएम और टियर-1 आपूर्तिकर्ताओं के लिए उन्नत ईवी तकनीक तक पहुँच बढ़ेगी।

स्टर्लिंग टूल्स के निदेशक अनीश अग्रवाल ने भारत के ईवी बाजार में सुरक्षा को आगे बढ़ाने में साझेदारी की भूमिका पर प्रकाश डाला। जीएलवीएसी वाईटी के महाप्रबंधक ली किंगहुआ ने भारत को इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बताया, उन्होंने भारत के ग्रीन मोबिलिटी बदलाव का समर्थन करने के लिए जीएलवीएसी की विशेषज्ञता और स्टर्लिंग की विनिर्माण शक्तियों के बीच संरेखण पर ध्यान दिया।

कला और साहित्य: छात्रों के लिए एक विकल्प से भी अधिक अनिवार्य

विजय गर्ग

कला और साहित्य को अपनाना कल उनकी मानसिक भलाई में एक निवेश है - उनके भावी जीवन के लिए एक अमूल्य संपत्ति कई दशक पहले, जब मैंने कॉलेज में साहित्य लेने का विकल्प चुना, उस समय जब मेरे कई साथियों ने विज्ञान चुना, तो लोगों ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ऐसा माना जाता था कि यह औसत दर्जे के लोगों की पसंद है, एक ऐसा विषय जिसके लिए अधिक बुद्धि या समर्पण की आवश्यकता नहीं होती। यह वह जगह थी जहां जिन छात्रों को प्रमुख क्षेत्रों में सीट सुरक्षित नहीं मिली, वे अंततः बस गए। तब कला और साहित्य को टिकाऊ नहीं माना जाता था। न ही अब माता-पिता द्वारा इसे अधिक महत्व दिया जाता है। रचनात्मक गतिविधियों को अभी भी शौक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, और जैसे-जैसे बच्चे उच्च ग्रेड तक पहुंचते हैं या कॉलेज में प्रवेश करते हैं, उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है। क्यों? क्योंकि कला टिकाऊ नहीं है. यह लाभदायक नहीं है. यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी या लेखांकन में डिग्री जितनी आसानी से करियर नहीं बनाता है। उस विवाद में अभी भी कुछ सच्चाई हो सकती है जो माता-पिता को अपने बच्चों को अतिरिक्त गतिविधियों से दूर करने के लिए प्रेरित कर रही है क्योंकि भविष्य की दौड़ बढ़ती जा रही है। लेकिन हमारे बच्चों को करियर निर्माण के तनाव से राहत दिलाने में रचनात्मक गतिविधियों की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। ऐसे समय में जब वे उच्च शिक्षा की चुनौतियों से जूझ रहे हैं, कलात्मक प्रयास ही उन्हें उनकी चिंताओं से राहत दिला सकते हैं। यह अक्सर किसी रेखाचित्र की पंक्तियों या किसी कविता के छंदों में होता है कि बच्चों को शब्दों से परे एक आवाज़ मिलती है - उनके आंतरिक विचारों और भावनाओं की एक मूक लेकिन शक्तिशाली रिहाई। ऐसी दुनिया में जो सफलता को परीक्षाओं और अंकों से मापती है, ये गतिविधियाँ एक आश्रय प्रदान करती हैं, जहाँ मन बिना किसी सीमा के भटकने, अन्वेषण करने और निर्माण करने के लिए स्वतंत्र है। अध्ययनों से लगातार पता चला है कि जो छात्र पेंटिंग, लेखन, संगीत, नृत्य या थिएटर में संलग्न होते हैं, वे उन लोगों की तुलना में कम तनाव स्तर का अनुभव करते हैं जो ऐसा नहीं करते हैं। ये गतिविधियाँ पढ़ाई द्वारा थोपे गए कठोर शेड्यूल और समय-सीमा के प्रति संतुलन के रूप में कार्य करती हैं, जिससे बच्चों को आराम मिलता है और वे अपनी ऊर्जा को पूरी तरह से अपनी किसी चीज़ में लगा सकते हैं। कला और साहित्य की अक्सर अनदेखी की जाने वाली खूबियों में से एक है भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास। जब बच्चे कहानियों में डूब जाते हैं, तो वे अपनी और दूसरों की जटिल भावनाओं को समझने लगते हैं। एक उपन्यास सहानुभूति सिखा सकता है, जबकि संगीत का एक टुकड़ा उन भावनाओं को प्रतिबिंबित कर सकता है जिन्हें व्यक्त करने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। ये क्षण आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देते हैं, जो आज की तेज़ गति वाली दुनिया में महत्वपूर्ण है जहां युवा सामाजिक दबावों और शैक्षणिक मांगों से जूझ रहे हैं। ये रचनात्मक गतिविधियाँ बच्चों को न केवल अधिक सहानुभूतिपूर्ण बनाती हैं; वे उन्हें अपनी आंतरिक दुनिया के बारे में जागरूक होना भी सिखाते हैं - एक ऐसा कौशल जो उन्हें कक्षा की दीवारों से परे अच्छी तरह से काम करेगा। उन क्षणों में जब वे अभिभूत महसूस करते हैं, तो वे किसी पसंदीदा पुस्तक के आराम, ड्राइंग की खुशी, या जर्नलिंग की शांति की ओर रुख कर सकते हैं। यह एक व्यक्तिगत अनुष्ठान बन जाता है, तरोताजा होने और तरोताजा होने का एक तरीका, जैसे किसी कहानी के पन्नों या कैनवास के रंगों के भीतर तूफान से आश्रय ढूंढना। नृत्य, संगीत, ललित कला और रचनात्मक लेखन जैसी पाठ्येतर गतिविधियाँ केवल मनोरंजन नहीं हैं; वे क्रूसिबल हैं जहां जीवन कौशल गढ़े जाते हैं। समस्या-समाधान, अनुकूलनशीलता और नवीनता-वयस्कता में सभी आवश्यक कौशल-इन गतिविधियों में अपनी जड़ें पाते हैं। बच्चे अभ्यास के माध्यम से धैर्य, असफलता के माध्यम से लचीलापन और अभिव्यक्ति के माध्यम से आत्मविश्वास सीखते हैं, जिससे एक मजबूत नींव तैयार होती है जो जीवन की अपरिहार्य चुनौतियों में उनका समर्थन करेगी। माता-पिता और शिक्षकों को अवश्य करना चाहिएबच्चे के मानसिक और भावनात्मक विकास में इन गतिविधियों की भूमिका को पहचानें। शिक्षाविदों और पाठ्येतर रुचियों के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देने से लचीले व्यक्तियों का निर्माण किया जा सकता है जो न केवल उच्च उपलब्धि हासिल करने वाले बल्कि खुश, स्वस्थ इंसान भी हैं। जैसे-जैसे जीवन का दबाव बढ़ता है, ये रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ सहारा बन जाती हैं, जो हमें तनाव के समय में सहारा देती हैं और उस खुशी को फिर से जगाती हैं जिसे हमने बड़े होने की जल्दबाजी में अलग रख दिया था।

कला और साहित्य: छात्रों के लिए एक विकल्प से भी अधिक अनिवार्य

कला और साहित्य को अपनाना कल उनकी मानसिक भलाई में एक निवेश है - उनके भावी जीवन के लिए एक अमूल्य संपत्ति कई दशक पहले, जब मैंने कॉलेज में साहित्य लेने का विकल्प चुना, उस समय जब मेरे कई साथियों ने विज्ञान चुना, तो लोगों ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ऐसा माना जाता था कि यह औसत दर्जे के लोगों की पसंद है, एक ऐसा विषय जिसके लिए अधिक बुद्धि या समर्पण की आवश्यकता नहीं होती। यह वह जगह थी जहां जिन छात्रों को प्रमुख क्षेत्रों में सीट सुरक्षित नहीं मिली, वे अंततः बस गए। तब कला और साहित्य को टिकाऊ नहीं माना जाता था। न ही अब माता-पिता द्वारा इसे अधिक महत्व दिया जाता है। रचनात्मक गतिविधियों को अभी भी शौक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, और जैसे-जैसे बच्चे उच्च ग्रेड तक पहुंचते हैं या कॉलेज में प्रवेश करते हैं, उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है। क्यों? क्योंकि कला टिकाऊ नहीं है. यह लाभदायक नहीं है. यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी या लेखांकन में डिग्री जितनी आसानी से करियर नहीं बनाता है। उस विवाद में अभी भी कुछ सच्चाई हो सकती है जो माता-पिता को अपने बच्चों को अतिरिक्त गतिविधियों से दूर करने के लिए प्रेरित कर रही है क्योंकि भविष्य की दौड़ बढ़ती जा रही है। लेकिन हमारे बच्चों को करियर निर्माण के तनाव से राहत दिलाने में रचनात्मक गतिविधियों की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। ऐसे समय में जब वे उच्च शिक्षा की चुनौतियों से जूझ रहे हैं, कलात्मक प्रयास ही उन्हें उनकी चिंताओं से राहत दिला सकते हैं। यह अक्सर किसी रेखाचित्र की पंक्तियों या किसी कविता के छंदों में होता है कि बच्चों को शब्दों से परे एक आवाज़ मिलती है - उनके आंतरिक विचारों और भावनाओं की एक मूक लेकिन शक्तिशाली रिहाई। ऐसी दुनिया में जो सफलता को परीक्षाओं और अंकों से मापती है, ये गतिविधियाँ एक आश्रय प्रदान करती हैं, जहाँ मन बिना किसी सीमा के भटकने, अन्वेषण करने और निर्माण करने के लिए स्वतंत्र है। अध्ययनों से लगातार पता चला है कि जो छात्र पेंटिंग, लेखन, संगीत, नृत्य या थिएटर में संलग्न होते हैं, वे उन लोगों की तुलना में कम तनाव स्तर का अनुभव करते हैं जो ऐसा नहीं करते हैं। ये गतिविधियाँ पढ़ाई द्वारा थोपे गए कठोर शेड्यूल और समय-सीमा के प्रति संतुलन के रूप में कार्य करती हैं, जिससे बच्चों को आराम मिलता है और वे अपनी ऊर्जा को पूरी तरह से अपनी किसी चीज़ में लगा सकते हैं। कला और साहित्य की अक्सर अनदेखी की जाने वाली खूबियों में से एक है भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास। जब बच्चे कहानियों में डूब जाते हैं, तो वे अपनी और दूसरों की जटिल भावनाओं को समझने लगते हैं। एक उपन्यास सहानुभूति सिखा सकता है, जबकि संगीत का एक टुकड़ा उन भावनाओं को प्रतिबिंबित कर सकता है जिन्हें व्यक्त करने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। ये क्षण आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देते हैं, जो आज की तेज़ गति वाली दुनिया में महत्वपूर्ण है जहां युवा सामाजिक दबावों और शैक्षणिक मांगों से जूझ रहे हैं। ये रचनात्मक गतिविधियाँ बच्चों को न केवल अधिक सहानुभूतिपूर्ण बनाती हैं; वे उन्हें अपनी आंतरिक दुनिया के बारे में जागरूक होना भी सिखाते हैं - एक ऐसा कौशल जो उन्हें कक्षा की दीवारों से परे अच्छी तरह से काम करेगा। उन क्षणों में जब वे अभिभूत महसूस करते हैं, तो वे किसी पसंदीदा पुस्तक के आराम, ड्राइंग की खुशी, या जर्नलिंग की शांति की ओर रुख कर सकते हैं। यह एक व्यक्तिगत अनुष्ठान बन जाता है, तरोताजा होने और तरोताजा होने का एक तरीका, जैसे किसी कहानी के पन्नों या कैनवास के रंगों के भीतर तूफान से आश्रय ढूंढना। नृत्य, संगीत, ललित कला और रचनात्मक लेखन जैसी पाठ्येतर गतिविधियाँ केवल मनोरंजन नहीं हैं; वे क्रूसिबल हैं जहां जीवन कौशल गढ़े जाते हैं। समस्या-समाधान, अनुकूलनशीलता और नवीनता-वयस्कता में सभी आवश्यक कौशल-इन गतिविधियों में अपनी जड़ें पाते हैं। बच्चे अभ्यास के माध्यम से धैर्य, असफलता के माध्यम से लचीलापन और अभिव्यक्ति के माध्यम से आत्मविश्वास सीखते हैं, जिससे एक मजबूत नींव तैयार होती है जो जीवन की अपरिहार्य चुनौतियों में उनका समर्थन करेगी। माता-पिता और शिक्षकों को अवश्य करना चाहिएबच्चे के मानसिक और भावनात्मक विकास में इन गतिविधियों की भूमिका को पहचानें। शिक्षाविदों और पाठ्येतर रुचियों के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देने से लचीले व्यक्तियों का निर्माण किया जा सकता है जो न केवल उच्च उपलब्धि हासिल करने वाले बल्कि खुश, स्वस्थ इंसान भी हैं। जैसे-जैसे जीवन का दबाव बढ़ता है, ये रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ सहारा बन जाती हैं, जो हमें तनाव के समय में सहारा देती हैं और उस खुशी को फिर से जगाती हैं जिसे हमने बड़े होने की जल्दबाजी में अलग रख दिया था।

संपादकीय

डिजिटल मीडिया का माहौल पत्रकारों द्वारा समाचार करने की अपनी वैधता स्थापित करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है?

"लंबे समय तक, मीडिया वातावरण ने समाचार के निर्माताओं और उसके दर्शकों के बीच एक स्पष्ट अलगाव के साथ काम किया। पत्रकारों ने न केवल यह नियंत्रित किया कि समाचार कैसा दिखता है, बल्कि इसे कैसे वितरित किया गया, या तो पाठकों तक मुद्रित रूप में या टेलीविजन और रेडियो पर आने वाले प्रसारित संदेशों के माध्यम से।

"डिजिटल परिवेश में, पत्रकार अभी भी समाचार बनाते हैं और दर्शक अभी भी इसका उपभोग करते हैं, लेकिन उनके बीच के रास्ते इतने सीधे नहीं हैं। बस कुछ बदलावों को सूचीबद्ध करने के लिए: जो समाचार पहले अलग-अलग मीडिया चैनलों के लिए बनाए जाते थे, वे सभी अब डिजिटल चैनलों पर एक साथ मिल जाते हैं; सोशल मीडिया ऐसे स्थान बन गए हैं जहां पत्रकारों के नियंत्रण से बाहर समाचार साझा किए जा सकते हैं और उन पर टिप्पणी की जा सकती है; और गैर-पत्रकार डिजिटल संचार चैनलों के माध्यम से आसानी से अपनी बात रख सकते हैं। भले ही समाचार वैसा ही दिखता हो जैसा पहले था, ये सभी अन्य परिवर्तन इसके आगे बढ़ने के तरीके को बदल देते हैं।

"अगर यह दर्शकों और समाचार उद्योग के लिए भ्रमित करने वाला लगता है, तो यह पत्रकारिता शोधकर्ताओं के लिए भी भ्रमित करने वाला है। फिर हम इसका अध्ययन कैसे करें? न्यू मीडिया एंड सोसाइटी जर्नल में हाल के एक लेख में, मैंने सुझाव दिया है कि केवल समाचार कहानियों को देखना ही पर्याप्त नहीं है। बल्कि, हमें समाचारों के प्रसार पर विचार करने की आवश्यकता है। मैं सर्कुलेशन का उपयोग सूचना को एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक स्थानांतरित करने के अधिक यांत्रिक अर्थ में और सांस्कृतिक अर्थ में उन अर्थों के रूप में करता हूं जो इस प्रक्रिया में एक कहानी से जुड़ जाते हैं।

"उदाहरण के लिए, यदि मैं फेसबुक पर एक समाचार साझा करता हूं, तो मैं एक लिंक पर क्लिक करने, कुछ टेक्स्ट जोड़ने और इसे अपने दोस्तों को भेजने में सक्षम करने के लिए एक जटिल तकनीकी बुनियादी ढांचे पर भरोसा कर रहा हूं। लेकिन एक कहानी साझा करना भी अर्थ जोड़ रहा है। मैं इसे महत्वपूर्ण के रूप में चिह्नित कर रहा हूं और संभवतः इसके बारे में कुछ टिप्पणी जोड़ रहा हूं, जो बाद में दूसरों से प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकता है। मैं जो तर्क देता हूं वह यह है कि अगर हमें समाचार को ज्ञान के एक रूप के रूप में समझना है - जैसे कि हमें दुनिया के बारे में कुछ बताना है - तो हमें उस पूरी प्रक्रिया को देखना होगा जिसके माध्यम से समाचार प्रसारित होते हैं। यह कठिन लग सकता है, लेकिन यह दर्शाता है कि पत्रकारिता तेजी से कैसी हो रही है, न कि पहले कैसी थी।

"सर्कुलेशन समाचारों के लिए इन नए रास्तों की जांच करने के लिए रोमांचक भविष्य के अनुसंधान दिशा-निर्देश खोलता है, जिसमें विभिन्न अभिनेताओं की भूमिका भी शामिल है - व्यक्तिगत लोगों से लेकर तकनीकी कंपनी के दिग्गजों तक। यह सब उत्तर देने में मदद करता है कि डिजिटल मीडिया परिवेश में समाचार कैसे काम करता है।

आवाज से बनाएं पहचान, डबिंग आर्टिस्ट के तौर पर बनाएं अपना करियर

डबिंग आर्टिस्ट बनने के लिए एक महत्वपूर्ण योग्यता आकर्षक आवाज़ है। आवाज और शब्दों पर पकड़ रखने वाला कोई भी युवा डबिंग आर्टिस्ट या वॉइस ओवर आर्टिस्ट बनने की पहल कर सकता है। डबिंग आर्टिस्टों की बढ़ती मांग को देखते हुए कई संस्थान हैं जो इससे संबंधित शॉर्ट टर्म और सर्टिफिकेट कोर्स ऑफर करते हैं। आज अच्छी और सुरीली आवाज का हुनर रखने वाले युवाओं के लिए फिल्मों से लेकर नाटक, रेडियो, टेलीविजन, विज्ञापन, डॉक्यूमेंट्री, एनिमेशन फिल्में आदि डबिंग कला के रूप में काम कर रहे हैं।यहां काम करने के बेहतरीन अवसर हैं आवाज कौशल डबिंग आर्टिस्ट बनने के लिए एक महत्वपूर्ण योग्यता आकर्षक आवाज़ है। आवाज और शब्दों पर पकड़ रखने वाला कोई भी युवा डबिंग आर्टिस्ट या वॉइस ओवर आर्टिस्ट बनने की पहल कर सकता है। डबिंग आर्टिस्टों की बढ़ती मांग को देखते हुए कई संस्थाएं हैं जो इससे संबंधित शॉर्ट टर्म और सर्टिफिकेट कोर्स संचालित कर रही हैं। इन कोर्स के माध्यम से छात्रों को वॉयस ओवर का तकनीकी ज्ञान दिया जाता है। अपनी आवाज को बेहतर बनाने के लिए आप इस कोर्स की मदद ले सकते हैं। तकनीक के समतुल्यहाँ आवश्यक है मौजूदा दौर में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहां टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल न होता हो। जाहिर है, डबिंग आर्टिस्ट बनने के लिए आपके पास अपने काम से जुड़ी तकनीकी जानकारी होनी चाहिए। आपको यह याद रखना होगा कि रिकॉर्डिंग करते समय माइक को कितनी दूर या कितने पास रखना है और डबिंग तकनीक को ध्यान से समझना होगा। उद्योग में रिकॉर्डिंग के दो तरीके अपनाए जाते हैं। पहले पैरा डबिंग और फिर लिप सिंकिंग। पैरा डबिंग में कलाकार को ऑडियो या वीडियो पर ध्यान दिए बिना वहां रिकॉर्डिंग करनी होती हैलिप-सिंगिंग में, आवाज अभिनेता को पात्र के होठों को पढ़ना होता है और उच्चारण का मिलान करते हुए रिकॉर्डिंग करनी होती है। आपको इन तरीकों को विस्तार से समझना होगा. रोजगार के अवसर डबिंग आर्टिस्ट के तौर पर आपको आकाशवाणी, दूरदर्शन, विभिन्न टीवी चैनलों, नाटकों, रेडियो, विज्ञापनों, वृत्तचित्रों, एनीमेशन फिल्मों आदि में काम करने का अवसर मिल सकता है। शुरुआती दौर में आपको अवसर ढूंढना थोड़ा मुश्किल हो सकता है लेकिन एक बार जब आप अपनी आवाज लोगों तक पहुंचा देंगे तो आपके लिए नौकरी के अवसर खुल जाएंगे।की कोई कमी नहीं होगी जहां तक कमाई की बात है तो शुरुआती दौर में आप प्रोजेक्ट के आधार पर 10 से 12 हजार रुपये प्रति माह कमा सकते हैं, लेकिन अनुभव बढ़ने के साथ मौके और कमाई के मामले में आप दोगुनी-चौगुनी कमाई हासिल कर सकते हैं। आपको बस अपने कौशल को निखारना है। विशेष सुविधाएँ रास्ता आसान बनाती हैं अच्छी आवाज के साथ-साथ डबिंग कलात्मकता के लिए अच्छी आवाज की गुणवत्ता, स्पष्ट उच्चारण और भाषा पर मजबूत पकड़ की आवश्यकता होती है। इसके अलावा डबिंग आर्टिस्ट किरदार या परिस्थिति के अनुसार अपनी आवाज बदल सकता हैइसे लाना ही होगा, जैसे इमोशन या कॉमेडी की जगह अपनी आवाज को उसी के अनुरूप ढालना होता है। इसलिए आपको अपनी आवाज में आवश्यकतानुसार हाई-पिच और लो-पिच लाने की कला सीखनी होगी।

स्वतंत्रता बनाम मुक्ति

विजय गर्ग

एक मशहूर कथन है- मनुष्य पैदा तो स्वतंत्र होता है, पर हर जगह गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। यह कथन पश्चिमी विचारक रूसो का है। जीन जैक्स रूसो। उन्होंने मनुष्य की सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए यह बात कही थी। उनकी किताब है 'सोशल कान्ट्रैक्ट'। उसका ही कथन है यह। पश्चिम के विचारक मुख्य रूप से पदार्थवादी हैं। उनकी चिंता के केंद्र में मनुष्य की भौतिक जरूरतें हैं। इसलिए उन्होंने संपत्ति के अर्जन और वितरण पर कुछ अधिक चिंतन किया है। मानवीय अधिकारों की बातें अधिक की हैं। इसलिए पश्चिम में मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए संसाधन जुटाने के प्रयास भी अधिक हुए हैं। पर, अंतिम रूप से यही देखा गया और देखा जा रहा है कि मनुष्य की भौतिक जरूरतों को पूरा कर देने भर से मनुष्य के जीवन में सुख का संचार नहीं हो जाता। वह भौतिक संपन्नता अर्जित कर भी गुलामी की बेड़ियों से मुक्त नहीं हो जाता। इसलिए कि रूसो और दूसरे पश्चिमी विचारकों ने मनुष्य की जिस स्वतंत्रता की बात की, वह दरअसल, मुक्ति नहीं है। स्वतंत्रता एक प्रकार का अवकाश भर है। अपने ढंग से जी लेने का अवकाश। जहां अपने ढंग से जीने का अवकाश हो, वहां स्वतंत्रता का अहसास होने लगता है। मगर मनुष्य को जीवन जीने के लिए स्वतंत्रता भर नहीं चाहिए। उसे वास्तविक सुख तो मुक्ति में ही मिलता है।

आकांक्षाओं के आयाम

मुक्ति का अर्थ मरने के बाद स्वर्ग की प्राप्ति नहीं है। मुक्ति हर तरह की सांसारिक जकड़बंदियों से मुक्त होना है। भारतीय दर्शन मुक्ति की बात करता है। पश्चिमी दर्शन स्वतंत्रता की बात करता है। मनुष्य के पैदा

होते ही उस पर परिवार, रिश्तों, समाज और व्यवस्था अपनी आकांक्षाओं की बौछार शुरू कर देते हैं। इस तरह मनुष्य के भीतर भी तरह-तरह की आकांक्षाएं भरती जाती हैं। उन्हीं को वह अपना कर्तव्य, अपना धर्म अपना दायित्व मान लेता है। पैदा होते ही मनुष्य में मोह उपजना शुरू हो जाता है। रिश्तों के प्रति मोह, वस्तुओं के प्रति मोह। यह मोह

उसका सबसे बड़ा बंधन है। इसी मोह में बंध कर वह दुनिया के सारे प्रपंच रचता है। संपत्ति अर्जित करने की आकांक्षा से भरता जाता है। उसके लिए तरह-तरह के तिकड़म, तरह-तरह के छल-छद्म रचता-अपनाता जाता है। भारतीय दर्शन ने जगत को माया इसी अर्थ में कहा था कि जगत मनुष्य में मोह पैदा कर उसे जकड़ने का प्रयास करता है। प्रकृति और पुरुष के रूप में इस सृष्टि की कल्पना की गई, तो उसमें भी यही माना गया कि प्रकृति पुरुष को पहले मोहाविष्ट कर उसमें चंचलता भर देती है। फिर पुरुष यानी मनुष्य संसार की मिथ्या रचना में भ्रमित हो भटकता फिरता है। भारतीय दर्शन इसी मोह, इसी भ्रम से मुक्ति की बात करता है। यह सांख्य दर्शन की बात है।

मूल्यों का सिद्धांत

मुक्ति तो हर किसी को चाहिए। इसलिए कि मनुष्य की मूल आकांक्षा मुक्ति की है। मगर हम अक्सर मुक्ति और स्वतंत्रता के बीच रास्ता भटक जाते हैं। मुक्ति के लिए प्रयास करने के x बजाय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना शुरू कर देते हैं। इसलिए कि हमारी ज्यादातर बेड़ियां भौतिक हैं। इसलिए कि वे हमारी भौतिक आकांक्षाओं से निर्मित हुई हैं। मनुष्य परिवार में पैदा होता, पलता बढ़ता है, तो वह उसकी आकांक्षाओं के साथ जीना शुरू कर देता है। उन आकांक्षाओं को पूरा करना अपना परम धर्म मानने लगता है। इसे लेकर बहुत सारे सिद्धांत निर्मित हैं, बहुत सारे नैतिक मूल्य स्थापित हैं। वही सिद्धांत और मूल्य मनुष्य को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भटकाते रहते हैं। वह किसी आर्थिक जुड़ता है, नौकरी-पेशा अपनाता है। ये सारी चीजें व्यवस्था के नियमों, कायदे-कानूनों से जुड़ी हैं। सामाजिक और राजकीय व्यवस्था के नियमों से। ये नियम-कायदे-कानून समय के हिसाब से बदलते रहते हैं। मनुष्य का सारा संघर्ष इन्हीं नियमों से आजादी के लिए शुरू हो जाता है। मानवाधिकारों की बातें यहीं से शुरू होती हैं। यहीं से संपत्ति के समान वितरण की नैतिक मांग और शोषण के विरुद्ध संघर्ष शुरू होता है। जैसे- जैसे मनुष्य की भौतिक संपन्नता सुनिश्चित करने के प्रयास तेज होते गए, मशीनों को तेज से तेजतर कर संसाधन जुटाने की होड़ बढ़ती गई, वैसे-वैसे दुनिया भर में मानवाधिकारों के लिए संघर्ष भी तेज होते गए। शोषण के विरुद्ध आवाजें बढ़ती गईं। लोकतांत्रिक मूल्यों की दुहाई देकर बहुत सारे आंदोलन उठे और क्रांति के आह्वान हुए। मगर वास्तविकता यही है कि मनुष्य की स्वतंत्रता दिन-ब-दिन गाढ़े रूप में प्रश्नांकित होती गई है। मनुष्य की बेड़ियां निरंतर मजबूत होती गई हैं।

मुक्ति वैराग्य नहीं

दरअसल, जीवन की धड़कनें मनुष्य की मुक्ति में धड़कती हैं। हम अपने को जिस मनुष्य के रूप में देखते - पहचानते हैं, वह वास्तव में निर्मित मनुष्य है। उसे परिवार, रिश्तों, समाज और व्यवस्थाओं ने निर्मित किया है। उससे अलग हमारे भीतर वास्तविक मनुष्य है, जो मुक्ति का आकांक्षी है। मुक्ति का अर्थ वैराग्य नहीं है। निस्संगता है। जिस परिवार, जिन रिश्तों, समाज और व्यवस्था में रह रहे हैं, उसमें रहते हुए भी निस्संग रहना। उसके मोह में न जकड़ना। कर्तव्यों का पालन करते हुए भी किसी प्रतिदान की अपेक्षा न करना ही मुक्ति है। मनुष्य की सबसे बड़ी पीड़ा अपने किए का प्रतिदान न प्राप्त कर पाने की है। इस प्रतिदान की आकांक्षा समाप्त हो जाए, तो हमारे भीतर आनंद की फुहारें झरनी शुरू हो जाती हैं। गीता का कर्म और फल का सिद्धांत तो अक्सर हम दोहराते हैं, पर वास्तव में उसका अनुपालन कठिन है। हम सारे काम करते ही इस आकांक्षा के साथ हैं कि उसका फल मिलेगा। उस फल से हमारा अपना, परिवार और समाज का पोषण होगा। यह पदार्थवादी आकांक्षा है। इस जकड़बंदी से छूटना ही मुक्ति का अहसास है। जिस स्वतंत्रता की बात रूसो ने की, वह वास्तव में मुक्ति की अड़चनों को बढ़ाने वाला ही है। मुक्ति मरने के बाद नहीं, जीते-जी प्राप्त करने की चीज है। इसके कुछ रास्ते योगदर्शन में मिलते हैं। केवल निस्संगता का अभ्यास हो जाए, तो मुक्ति का आनंद बरसना शुरू हो जाए। संलिप्तता नहीं, अलिप्तता ही तो मुक्ति है। संसार से मुक्ति, अपने से भी मुक्ति।

विजय गर्ग
स्वतंत्रता बनाम मुक्ति

विजय गर्ग

एक मशहूर कथन है- मनुष्य पैदा तो स्वतंत्र होता है, पर हर जगह गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। यह कथन पश्चिमी विचारक रूसो का है। जीन जैक्स रूसो। उन्होंने मनुष्य की सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण करते हुए यह बात कही थी। उनकी किताब है 'सोशल कान्ट्रैक्ट'। उसका ही कथन है यह। पश्चिम के विचारक मुख्य रूप से पदार्थवादी हैं। उनकी चिंता के केंद्र में मनुष्य की भौतिक जरूरतें हैं। इसलिए उन्होंने संपत्ति के अर्जन और वितरण पर कुछ अधिक चिंतन किया है। मानवीय अधिकारों की बातें अधिक की हैं। इसलिए पश्चिम में मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए संसाधन जुटाने के प्रयास भी अधिक हुए हैं। पर, अंतिम रूप से यही देखा गया और देखा जा रहा है कि मनुष्य की भौतिक जरूरतों को पूरा कर देने भर से मनुष्य के जीवन में सुख का संचार नहीं हो जाता। वह भौतिक संपन्नता अर्जित कर भी गुलामी की बेड़ियों से मुक्त नहीं हो जाता। इसलिए कि रूसो और दूसरे पश्चिमी विचारकों ने मनुष्य की जिस स्वतंत्रता की बात की, वह दरअसल, मुक्ति नहीं है। स्वतंत्रता एक प्रकार का अवकाश भर है। अपने ढंग से जी लेने का अवकाश। जहां अपने ढंग से जीने का अवकाश हो, वहां स्वतंत्रता का अहसास होने लगता है। मगर मनुष्य को जीवन जीने के लिए स्वतंत्रता भर नहीं चाहिए। उसे वास्तविक सुख तो मुक्ति में ही मिलता है।

आकांक्षाओं के आयाम

मुक्ति का अर्थ मरने के बाद स्वर्ग की प्राप्ति नहीं है। मुक्ति हर तरह की सांसारिक जकड़बंदियों से मुक्त होना है। भारतीय दर्शन मुक्ति की बात करता है। पश्चिमी दर्शन स्वतंत्रता की बात करता है। मनुष्य के पैदा होते ही उस पर परिवार, रिश्तों, समाज और व्यवस्था अपनी आकांक्षाओं की बौछार शुरू कर देते हैं। इस तरह मनुष्य के भीतर भी तरह-तरह की आकांक्षाएं भरती जाती हैं। उन्हीं को वह अपना कर्तव्य, अपना धर्म अपना दायित्व मान लेता है। पैदा होते ही मनुष्य में मोह उपजना शुरू हो जाता है। रिश्तों के प्रति मोह, वस्तुओं के प्रति मोह। यह मोह

उसका सबसे बड़ा बंधन है। इसी मोह में बंध कर वह दुनिया के सारे प्रपंच रचता है। संपत्ति अर्जित करने की आकांक्षा से भरता जाता है। उसके लिए तरह-तरह के तिकड़म, तरह-तरह के छल-छद्म रचता-अपनाता जाता है। भारतीय दर्शन ने जगत को माया इसी अर्थ में कहा था कि जगत मनुष्य में मोह पैदा कर उसे जकड़ने का प्रयास करता है। प्रकृति और पुरुष के रूप में इस सृष्टि की कल्पना की गई, तो उसमें भी यही माना गया कि प्रकृति पुरुष को पहले मोहाविष्ट कर उसमें चंचलता भर देती है। फिर पुरुष यानी मनुष्य संसार की मिथ्या रचना में भ्रमित हो भटकता फिरता है। भारतीय दर्शन इसी मोह, इसी भ्रम से मुक्ति की बात करता है। यह सांख्य दर्शन की बात है।

मूल्यों का सिद्धांत

मुक्ति तो हर किसी को चाहिए। इसलिए कि मनुष्य की मूल आकांक्षा मुक्ति की है। मगर हम अक्सर मुक्ति और स्वतंत्रता के बीच रास्ता भटक जाते हैं। मुक्ति के लिए प्रयास करने के बजाय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना शुरू कर देते हैं। इसलिए कि हमारी ज्यादातर बेड़ियां भौतिक हैं। इसलिए कि वे हमारी भौतिक आकांक्षाओं से निर्मित हुई हैं। मनुष्य परिवार में पैदा होता, पलता बढ़ता है, तो वह उसकी आकांक्षाओं के साथ जीना शुरू कर देता है। उन आकांक्षाओं को पूरा करना अपना परम धर्म मानने लगता है। इसे लेकर बहुत सारे सिद्धांत निर्मित हैं, बहुत सारे नैतिक मूल्य स्थापित हैं। वही सिद्धांत और मूल्य मनुष्य को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भटकाते रहते हैं। वह किसी आर्थिक जुड़ता है, नौकरी-पेशा अपनाता है। ये सारी चीजें व्यवस्था के नियमों, कायदे-कानूनों से जुड़ी हैं। सामाजिक और राजकीय व्यवस्था के नियमों से। ये नियम-कायदे-कानून समय के हिसाब से बदलते रहते हैं। मनुष्य का सारा संघर्ष इन्हीं नियमों से आजादी के लिए शुरू हो जाता है। मानवाधिकारों की बातें यहीं से शुरू होती हैं। यहीं से संपत्ति के समान वितरण की नैतिक मांग और शोषण के विरुद्ध संघर्ष शुरू होता है। जैसे- जैसे मनुष्य की भौतिक संपन्नता सुनिश्चित करने के प्रयास तेज होते गए, मशीनों को तेज से तेजतर कर संसाधन जुटाने की होड़ बढ़ती गई, वैसे-वैसे दुनिया भर में मानवाधिकारों के लिए संघर्ष भी तेज होते गए। शोषण के विरुद्ध आवाजें बढ़ती गईं। लोकतांत्रिक मूल्यों की दुहाई देकर बहुत सारे आंदोलन उठे और क्रांति के आह्वान हुए। मगर वास्तविकता यही है कि मनुष्य की स्वतंत्रता दिन-ब-दिन गाढ़े रूप में प्रश्नांकित होती गई है। मनुष्य की बेड़ियां निरंतर मजबूत होती गई हैं।

मुक्ति वैराग्य नहीं

दरअसल, जीवन की धड़कनें मनुष्य की मुक्ति में धड़कती हैं। हम अपने को जिस मनुष्य के रूप में देखते - पहचानते हैं, वह वास्तव में निर्मित मनुष्य है। उसे परिवार, रिश्तों, समाज और व्यवस्थाओं ने निर्मित किया है। उससे अलग हमारे भीतर वास्तविक मनुष्य है, जो मुक्ति का आकांक्षी है। मुक्ति का अर्थ वैराग्य नहीं है। निस्संगता है। जिस परिवार, जिन रिश्तों, समाज और व्यवस्था में रह रहे हैं, उसमें रहते हुए भी निस्संग रहना। उसके मोह में न जकड़ना। कर्तव्यों का पालन करते हुए भी किसी प्रतिदान की अपेक्षा न करना ही मुक्ति है। मनुष्य की सबसे बड़ी पीड़ा अपने किए का प्रतिदान न प्राप्त कर पाने की है। इस प्रतिदान की आकांक्षा समाप्त हो जाए, तो हमारे भीतर आनंद की फुहारें झरनी शुरू हो जाती हैं। गीता का कर्म और फल का सिद्धांत तो अक्सर हम दोहराते हैं, पर वास्तव में उसका अनुपालन कठिन है। हम सारे काम करते ही इस आकांक्षा के साथ हैं कि उसका फल मिलेगा। उस फल से हमारा अपना, परिवार और समाज का पोषण होगा। यह पदार्थवादी आकांक्षा है। इस जकड़बंदी से छूटना ही मुक्ति का अहसास है। जिस स्वतंत्रता की बात रूसो ने की, वह वास्तव में मुक्ति की अड़चनों को बढ़ाने वाला ही है। मुक्ति मरने के बाद नहीं, जीते-जी प्राप्त करने की चीज है। इसके कुछ रास्ते योगदर्शन में मिलते हैं। केवल निस्संगता का अभ्यास हो जाए, तो मुक्ति का आनंद बरसना शुरू हो जाए। संलिप्तता नहीं, अलिप्तता ही तो मुक्ति है। संसार से मुक्ति, अपने से भी मुक्ति।

स्टॉक मार्केट क्रैश के कारण आपको हो गया नुकसान ! अब जल्दबाजी में आप न कर बैठें ये गलतियां

परिवहन विशेष न्यूज

शेयर बाजार में पिछले काफी दिनों से बिकवाली भरा कारोबार रहा है। इस बिकवाली भरे कारोबार में निवेशकों को काफी नुकसान का सामना करना पड़ा है। शेयर बाजार में जब भी भारी गिरावट आती है तो निवेशक कई गलतियां कर बैठते हैं। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि मंदी भरे बाजार में आपको कौन-सी गलतियां करने से बचना चाहिए।

नई दिल्ली। शेयर बाजार में हम शानदार रिटर्न पाने के लिए अपनी जमा-पूंजी लगाते हैं, लेकिन जब बाजार में गिरावट आती है तो हमें नुकसान होता है। हम भले ही बाजार में दोबारा तेजी आने की उम्मीद करते हैं पर कई बार हम कुछ ऐसी गलतियां कर बैठते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए।

अगर अभी शेयर बाजार की स्थिति की बात करें तो पिछले एक महीने से बाजार में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। भारतीय शेयर बाजार के दोनों मुख्य सूचकांक अपने उच्चतम स्तर से गिरकर निचले स्तर पर पहुंच गए। ऐसे में निवेशकों के करीब 20 से 30 लाखों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ।

निवेशकों को यूएस इलेक्शन (US Election) के बाद बाजार में बढ़त आने की उम्मीद थी पर ऐसा हुआ नहीं । अमेरिकी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप (Donald Trump) को जीत हासिल हुई और यूएस फेडरल रिजर्व (US Fedral Reserve) ने एक बार फिर से ब्याज दर में कटौती करने का फैसला लिया। इन दोनों मुख्य घटना के बाद भी बाजार में गिरावट जारी रही।

शेयर बाजार में आई इस गिरावट के दौर पर ब्रेक कब लगेगा इसकी तो जानकारी नहीं है पर इस गिरावट भर सत्र में निवेशकों को कई बातों का ध्यान रखना चाहिए। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि शेयर बाजार में जब भी गिरावट आए तो आपको भूल कर भी गलतियां नहीं करनी चाहिए।

सही रणनीतियों का करें पालन

शेयर बाजार में जब भी मंदी आए तो ऐसे में सही रणनीति का अपनाना जरूरी है। बता दें कि बाजार में मंदी एक तरह का चक्र है। इसके टाला नहीं जा सकता है, बल्कि इस समय सही रणनीति को अपनाना बेहद जरूरी है। अगर आप सही रणनीति अपनाते हैं तो आप एक हद तक नुकसान से बच सकते हैं।

क्या रणनीति अपनाएं

मंदी के बाजार यानी जब स्टॉक मार्केट में भारी गिरावट आए तो उस समय आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने के लिए ट्रेडिंग रणनीतियों को अपनाना चाहिए। हम आपको इन रणनीतियों के बारे में नीचे बता रहे हैं-

निवेश को करें पुनर्गठित

कोई भी स्थिति एक जैसी नहीं रहती है। अगर शेयर बाजार में आज भारी गिरावट आई है तो भविष्य में एक समय आएगा जब बाजार अपने उच्चतम स्तर पर होगा। अगर आप बिकवाली भरे कारोबार में शेयर को बेच देते हैं तो भविष्य में बाजार में तेजी से होने वाले लाभ से चूक सकते हैं। बाजार में गिरावट के समय आप निवेश का पुनर्गठन करके खुद को नुकसान से बचा सकते हैं।

निवेश का पुनर्गठन करने के लिए आपको सरकारी बॉन्ड (Government Bond) या फिर शॉर्ट सेलिंग करके बैलेंस कर सकते

हैं। इसके अलावा आपको निवेश के लक्ष्यों (अल्पकालिक और दीर्घकालिक) को अलग करके ही निवेश करना चाहिए।

रक्षात्मक रणनीति

आप अगर बड़ी कंपनियों में निवेश करते हैं तो आप निवेश राशि को सुरक्षित रख सकते हैं। दरअसल, बड़ी कंपनियों में लंबे समय तक गिरावट नहीं रहती है और जब बाजार में तेजी आती है तो वह अपने स्तर पर वापस आ जाते हैं। वहीं छोटी कंपनियों में गिरती कीमतों को बनाए रखने में मुश्किल होती है और साथ ही कई बार इसमें लंबे समय के बाद तेजी आती है।

मार्केट एक्सपर्ट सलाह देते हैं कि हमें जरूरतों का उत्पादन करने वाली कंपनी जैसे- फार्मा और फूड इंडस्ट्री आदि में निवेश करना चाहिए। यह सेक्टर मंदी के समय में अपना व्यवसाय जारी रखते हैं।

बियर मार्केट ट्रेडिंग रणनीति

अगर आप लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करते हैं तब आपको बियर मार्केट ट्रेडिंग रणनीतियों को अपनाना चाहिए। इसमें आप निवेश की गई राशि का औसत निकालते हैं।

इसे ऐसे समझिए कि आपने किसी कंपनी में 100 शेयर 1000 रुपये में खरीदें और बिकवाली भरे कारोबार के बीच अब आप 700 रुपये में 100 शेयर खरीद सकते हैं। इस स्थिति में आप डॉलर-कॉस्ट एवरेजिंग तरीके का इस्तेमाल करें। इसके जरिये अगर आप निवेश का औसत लगाते हैं तो आप पाएंगे कि आपने 850 रुपये के औसत से 1000 शेयर खरीदें हैं। अगर आप लंबे समय तक निवेश करते हैं तब यह रणनीति काफी सही है।

पोर्टफोलियो डायवर्सिफाइड

हमें कभी भी किसी एक सेक्टर में निवेश नहीं करना चाहिए। हम अपने पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाइड बनाते हैं उतना खुद को नुकसान होने से बचाते हैं। इसे ऐसे समझिए कि अगर आप एक सेक्टर में निवेश करते हैं और वह सेक्टर में गिरावट आती है तो आपको नुकसान होगा। वहीं अगर आप कई सेक्टर में निवेश करते हैं तो उम्मीद रहती है कि किसी एक सेक्टर से आपको लाभ होगा। वहीं, बिकवाली भरे बाजार में बॉन्ड निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन रहता है।

समझदारी से करें निवेश

बिकवाली भरे कारोबार में आप स्टॉक खरीदने की रणनीति अपना रहे हैं तो आपक स्टॉक सेलेक्शन काफी सावधानी से करना चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार बिकवाली वाले कारोबार में फार्मा, पेट्रोलियम, कृषि सेक्टर आदि के स्टॉक खरीदने चाहिए। इसके अलावा आपको उन शेयरों के बारे में रिसर्च करना चाहिए जिन्होंने पिछले मंदी के समय अच्छा परफॉर्मेंस किया था।

सेकेंडरी मार्केट छा रहा एसजीबी, क्या यहां से खरीदना होगा बेस्ट ?

Sovereign Gold Bond Investment

आज के समय फिजिकल गोल्ड के साथ डिजिटल गोल्ड भी निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। डिजिटल गोल्ड में सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड्स (Sovereign Gold Bond-SGB) लोगों को काफी पसंद आ रहा है। अभी इसकी न्यू सीरीज नहीं आ रही है। वहीं सेकेंडरी मार्केट में एसजीबी प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहा है। ऐसे में सवाल है कि क्या इसे खरीदना सही रहेगा या नहीं।

नई दिल्ली। फिजिकल गोल्ड के साथ लोगों को डिजिटल गोल्ड (Digitak Gold) भी काफी पसंद आ रहा है। डिजिटल गोल्ड में सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड्स (Sovereign Gold Bond-SGB) काफी अच्छा ऑप्शन है। अभी निवेश के लिए सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की नई सीरीज जारी नहीं हुई। ऐसे में सेकेंडरी मार्केट्स में इसको लेकर काफी क्रेज देखा जा रहा है। लोगों की बढ़ती दिलचस्पी के बाद सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड 5 से 10 फीसदी के प्रीमियम पर ट्रेड कर रहा है।

क्या है सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (What is Sovereign Gold Bond)

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड एक सरकारी बॉन्ड है। यह भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा जारी होता है। इसमें कूपन रेट के साथ मैच्योरिटी पर टैक्स बेनिफिट भी मिलता है। यह बॉन्ड बाकी डिजिटल गोल्ड इनवेस्टमेंट से काफी अच्छा ऑप्शन माना जाता है। ऐसे में कई लोग सेकेंडरी मार्केट्स से पुरानी गोल्ड सीरीज खरीद रहे हैं। बता दें कि सेकेंडरी मार्केट्स से खरीदे गए गोल्ड की एक्टिव ट्रेडिंग नहीं होती है। ऐसे में इसमें नुकसान होने की भी संभावना बनी रहती है।

आरबीआई ने साल 2016 से 2024 तक सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की 67 किस्त जारी की थी। हालांकि, अब माना जा रहा है कि सरकार इसके दायरे को सीमित करके इसे घटा सकती है। इसकी वजह है कि यह सरकार के लिए महंगा साबित हो रहा है।

कहां से खरीदें SGB

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड सीरीज भले ही शेयर बाजार में लॉन्च नहीं हुई है पर इसकी लिस्टिंग सेकेंडरी मार्केट्स में हो चुकी है। इसके अलावा यह मार्केट के दोनों स्टॉक एक्सचेंज (BSE और NSE) के कैश सेगमेंट में ट्रेडिंग के लिए भी मौजूद हैं। ऐसे में निवेशक आसानी से डीमैट अकाउंट (Demat Account) का इस्तेमाल करते इसे खरीद या बेच सकते हैं। बता दें कि एसजीबी का एक यूनिट क ग्राम गोल्ड के बराबर होता है।

क्या सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड खरीदना रहेगा सही

अगर आप भी सेकेंडरी मार्केट्स में प्रीमियम के साथ एसजीबी खरीदने का सोच रहे हैं तो आपको आगामी 5 से 6 साल में चैलेंजिस का सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, मार्केट एक्सपर्ट के अनुसार अगर प्रीमियम के हिसाब से गोल्ड की कीमत नहीं बढ़ती है तो निवेशकों को नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। बता दें कि इस बॉन्ड का रिडेम्पशन प्राइस मार्केट प्राइस के आधार पर तय होता है। ऐसे में सेकेंडरी मार्केट्स से यह बॉन्ड खरीदना काफी रिस्कफुल हो सकता है।

होम लोन की प्री-पेमेंट पर क्या देना होता है चार्ज? इस ऑप्शन को सेलेक्ट करने से पहले ध्यान जानें सबकुछ

आज के समय में हम होन लोन (Home Loan) लेकर अपना घर खरीद सकते हैं. पर इसके बाद हमें लोन की पेमेंट की टेंशन बनी रहती है। हम चाहते हैं कि जल्दी से जल्दी लोन चुका कर हम वित्तीय तौर पर आजाद हो जाए। ऐसे में हम प्री-पेमेंट (Loan Pre-Payment) ऑप्शन को सेलेक्ट करते हैं पर यह ऑप्शन कभी कभी महंगी पड़ जाती है।

नई दिल्ली। आज के समय में अपने घर के सपने को साकार करने के लिए होम लोन (Home Loan) काफी मददगार साबित होता है। हालांकि, कई बार होम लोन का ब्याज लागत से ज्यादा पड़ जाता है। ऐसे में हम कोशिश करते हैं कि जल्द से जल्द लोन को चुकाएं। लोन को समय से पहले चुकाने के लिए हमारे पास प्री-पेमेंट (Loan Pre-Payment) का भी ऑप्शन होता है। इस ऑप्शन को सेलेक्ट करके लोन टेन्योर से पहले वित्ती आजादी पा सकते हैं।

हालांकि, इस ऑप्शन से पहले हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कई लोगों के अनुसार होम लोन प्री-पेमेंट ऑप्शन में चार्ज देना पड़ता है। हम आपको नीचे बताएंगे कि होम लोन प्री-पेमेंट ऑप्शन सेलेक्ट करना कितना सही है।

क्या होता है होम लोन प्री-पेमेंट

प्री-पेमेंट ऑप्शन में आप लोन के एक हिस्से का भुगतान समयसीमा से पहले ही कर देते हैं। लोग ब्याज के खर्च को बचाने के लिए यह ऑप्शन सेलेक्ट करते हैं। इसके अलावा प्री-पेमेंट का ऑप्शन सेलेक्ट करके आपका लोन जल्द खत्म हो जाता है जिससे आपको फाइनेंशियली फ्रीडम मिलती है। अगर आप यह ऑप्शन सेलेक्ट करते हैं तो आपको यह पहले चेक कर लेना चाहिए कि बैंक आपसे प्री-पेमेंट पर कोई पेनल्टी को नहीं लेगा।

क्या प्री-पेमेंट पर लगता है चार्ज

कई बैंक या फाइनेंशियल संस्थान लोन की प्री-पेमेंट पर पेनल्टी लगाते हैं। यह राशि लोन की बकाया राशि का प्रतिशत या फ्लैट फीस हो सकती है। कई बैंक लोन के शुरुआती सालों में ही पेनल्टी लगाते है। इसके बाद कई बैंक यह पेनल्टी नहीं लगाते हैं और कुछ बैंक ब्याज के भुगतान के आधार पर पेनल्टी लगाते हैं।

वहीं दूसरी तरफ कई बैंक प्री-पेमेंट पर कोई पेनल्टी नहीं लेते हैं। ऐसे में आपको होम लोन का एग्रीमेंट साइन करने से पहले प्री-पेमेंट के नियम व शर्तों के बारे में समझ लेना चाहिए। इसके अलावा आपको बाकी बैंकों के नियम व शर्तों के बारे में भी जान लेना चाहिए।

इन बातों का रखें ध्यान

आपको यह ऑप्शन सेलेक्ट करने से पहले पेनल्टी और ब्याज का कैलकुलेशन समझ लेना चाहिए। कई बार पेनल्टी ब्याद से ज्यादा हो जाता है। ऐसे में सभी तरह के कैलकुलेशन करने के बाद ही कोई फैसला लेना चाहिए।

अगर आप यह ऑप्शन सेलेक्ट करते हैं तो आपको ध्यान रखना चाहिए कि इसका इम्पेक्ट आपके इमरजेंसी फंड पर बिल्कुल भी न डालें। अगर ऐसा होता है तो भविष्य में आपको फाइनेंशियली प्रॉब्लम हो सकती है।

एसबीआई 'अमृत-कलश' स्कीम है निवेश का सिक्योर ऑप्शन, सीनियर सिटिजन के साथ आम नागरिकों को भी मिलता उच्च ब्याज का लाभ

निवेश के लिए फिक्सड डिपॉजिट काफी अच्छा ऑप्शन है। इसमें न ही कोई रिस्क होता है साथ ही अच्छा रिटर्न भी मिलता है। कई बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए स्पेशल एफडी स्कीम चलाया है। हम आपको देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक भारतीय स्टेट बैंक (SBI) की एफडी स्कीम के बारे में बताएंगे। इस स्कीम में निवेशक को उच्च ब्याज का लाभ मिलता है।

नई दिल्ली। अगर आप निवेश करना चाहते हैं पर कोई रिस्क नहीं लेना चाहते हैं तो ऐसे में फिक्स्ड डिपॉजिट (Fixed Deposit-FD) काफी अच्छा ऑप्शन है। सभी बैंक अपने ग्राहकों को एफडी की सुविधा देता है। कई बैंक ने एफडी स्पेशल स्कीम (FD Special Scheme) भी लॉन्च की है। भारतीय स्टेट बैंक (SBI) ने अपने कस्टमर के लिए स्पेशल फिक्स डिपॉजिट (FD) स्कीम अमृत कलश (Amrit Kalash) लॉन्च किया है। इस एफडी स्कीम में ग्राहकों को उच्च ब्याज का लाभ मिलता है। हम आपको इस आर्टिकल में इस एफडी

स्कीम के बारे में बताएंगे।

एसबीआई अमृत कलश एफडी

भारतीय स्टेट बैंक की अमृत कलश एफडी में 31 मार्च 2025 तक निवेश किया जा सकता है। इस स्कीम में सीनियर सिटिजन को एफडी पर 7.60 फीसदी और आम नागरिक को 7.10 फीसदी का ब्याज मिल रहा है। इस एफडी स्कीम 400 दिन तक निवेश कर सकते हैं। ये एक स्पेशल टर्म डिपॉजिट स्कीम है।

इस एफडी स्कीम में आप 2 करोड़ रुपये तक की एफडी करवा सकते हैं। इसके अलावा इसमें कस्टमर इंटरेस्ट पेमेंट का टेन्योर खुद सेलेक्ट करता है यानी मासिक, द्विमासिक और छहमाही में से कब ब्याज भुगतान हो इसका चयन ग्राहक द्वारा होता है। इस एफडी की खास बात है कि इसमें लोन की सुविधा भी मिलती है।

कैसे करें आवेदन

एसबीआई की इस स्कीम में आप ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से अप्लाई कर सकते हैं। ऑफलाइन आवेदन के लिए आपको बैंक के ब्रांच जाना होगा। वहीं, ऑनलाइन नेटबैंकिंग और SBI YONO ऐप के जरिये भी निवेश किया जा सकता है।

नीचे की इमेज में हमने आपको बताया है कि भारतीय स्टेट बैंक एफडी पर कितना ब्याज दे रहा है।

यहां भी कर सकते हैं निवेश

अमृत कलश एफडी के अलावा निवेश के लिए 'अमृत वृष्टि'एफडी भी काफी अच्छा स्कीम है। इस स्कीम में सालाना 7.25 फीसदी का ब्याज मिलता है। वहीं, सीनियर सिटिजन को 7.75 फीसदी की दर से इंटरेस्ट ऑफर होता है। इस स्कीम में भी 31 मार्च 2025 तक निवेश किया जा सकता है।

एसबीआई का 'वीकेयर' भी स्पेशल टर्म डिपॉजिट स्कीम है। इस स्कीम में 5 साल से ज्यादा समय के एफडी पर 50 बेसिस पॉइंट्स का अतिरिक्त ब्याज मिलता है।

एक बार फिर बिगड़ा रसोई का बजट, प्याज के बाद लहसुन ने दिया आम जनता को झटका

Vegetable Price Hike

बाजार में सब्जियों की कीमतों में कोई नरमी देखने को नहीं मिली है। हरी सब्जियों के साथ टमाटर के दाम अभी भी उच्चतम स्तर पर बने हुए हैं। फेस्टिव सीजन के खत्म होने के बाद भी इनकी कीमतो में नरमी न आने के कारण आम जनता को महंगाई की मार झेलनी पड़ रही है।

नई दिल्ली। महंगाई की मार का असर फेस्टिव सीजन के बाद भी चालू है। जहां लोगों को उम्मीद थी कि फेस्टिव सीजन के खत्म होने के बाद उन्हें महंगाई से राहत मिलेगी पर हुआ इसका उलटा। बाजार में हरी सब्जियों, टमाटर के दाम में भले ही हल्की नरमी आई है पर अभी भी इनके दाम उच्चतम स्तर पर बने हुए हैं। वहीं, प्याज की कीमतों में फिर से तेजी आई। इसके अलावा अब लहसुन के दाम में शानदार तेजी देखने को मिल रही है।

हाल में क्रिसिल की रिपोर्ट के अनुसार पिछले महीने अक्टूबर में सब्जियों के दाम में हुई बढ़ोतरी के कारण वेज थाली और नॉन-वेज थाली दोनों महंगी रही। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल की रिपोर्ट के मुताबिक वेज थाली एक साल की समान अवधि से 20 फीसदी बढ़कर 33.3 रुपये प्रति प्लेट हो गई है। नॉन-वेज थाली भी 5.11 फीसदी महंगी होकर 61.6 रुपये प्रति प्लेट हो गई।

ऐसे में 12 नवंबर और 14 नवंबर को आने वाले महंगाई के आंकड़े से पहले लोगों ने अनुमान लगाया है कि अक्टूबर में महंगाई ने पक्का कोई रिकॉर्ड तोड़ा होगा।

अब लहसुन हुआ महंगा

अब देश के कई बाजारों में लहसुन 500 रुपये प्रति किलो के भाव पर बिक रहा है। जहां कुछ महीने पहले यह 100 से 150 रुपए किलो बिक रहा था। माना जा रहा है कि लहसुन की कीमतों (Garlic Price Hike) में और इजाफा हो सकता है। इस वजह से कई लोग लहसुन खरीदने से कतरा रहे हैं और यही कारण है कि अनाज मंडियों में इसकी बिक्री काफी कम हो रही है।

राजस्थान के निम्बाहेड़ा कृषि उपज मंडी में लहसुन की सीधी खरीद पर 91 हजार 101 रुपए प्रति क्विंटल की बोली लगी थी। यह अभी तक की सबसे महंगी बोली थी। ऐसे में किसानों ने आशंका जताई है कि आने वाले दिनों में लहसुन के दाम और बढ़ सकते हैं।

क्यों महंगा हो रहा है लहसुन

हर साल सर्दियों में लहसुन की मांग बढ़ जाती है। इसके अलावा लहसुन की बुआई हो जाने के बाद बाजार में पुराने लहसुन की सप्लाई कम हो जाती है। जब भी किसी चीज की डिमांड ज्यादा होती है और सप्लाई कम होता है तो उसके दाम में इजाफा होता है। ऐसे में माना जा रहा है कि जब तक बाजार में नए लहसुन नहीं आएंगे तब तक लहसुन की कीमतों में गिरावट नहीं होगी।

प्याज भी हुआ महंगा

न्यूज एजेंसी एएनआई के अनुसार प्याज की कीमतों में अभी भी गिरावट नहीं आई है। देश के कई थोक बाजार में प्याज 70 से 8- रुपये प्रति किलो के भाव पर बिक रहा है। राजधानी दिल्ली में 8 नवंबर 2024 को प्याज की कीमत करीब 80 रुपये प्रति किलो थी।

अब हिंदी में पढ़िये राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला, विधि साहित्य प्रकाशन ने तैयार किया करीब 1100 पन्नों का अनुवाद

सुप्रीम कोर्ट के फैसले अंग्रेजी में ही होते हैं लेकिन कोर्ट हिंदी में और देश की कई अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी फैसलों का अनुवाद कराता है लेकिन अयोध्या का फैसला अभी तक हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अब विधि साहित्य प्रकाशन ने राम जन्मभूमि पर आये सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हिंदी में अनुवाद तैयार किया है। विधि साहित्य प्रकाशन कानून मंत्रालय के तहत आता है।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने नौ नवंबर 2019 को अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण प्रशस्त करने वाला फैसला सुनाया था। अब पांच वर्ष बाद राम मंदिर का वह फैसला हिंदी में उपलब्ध होगा। फैसले का हिंदी अनुवाद तैयार हो गया है और 26 नवंबर संविधान दिवस को कानून मंत्री हिंदी के फैसले का विमोचन करेंगे।

अंग्रेजी में ही होते हैं सुप्रीम कोर्ट के फैसले

वैसे तो सुप्रीम कोर्ट के फैसले अंग्रेजी में ही होते हैं, लेकिन कोर्ट हिंदी में और देश की कई अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी फैसलों का अनुवाद कराता है लेकिन अयोध्या का फैसला अभी तक हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अब विधि साहित्य प्रकाशन ने राम जन्मभूमि पर आये सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हिंदी में अनुवाद तैयार किया है। विधि साहित्य प्रकाशन कानून मंत्रालय के तहत आता है और ये सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के फैसलों का हिंदी में अनुवाद करता है और हिंदी में फैसलों को प्रकाशित करता है।

1400 पन्नों का हिंदी अनुवाद

एक अधिकारी ने बताया कि विधि साहित्य प्रकाशन ने अयोध्या राम जन्मभूमि फैसले के करीब 1400 पन्नों के अंग्रेजी के फैसले का हिंदी में अनुवाद तैयार कर लिया है। तैयार अनुवाद करीब 1100 पन्नों का होगा। हिंदी में तैयार फैसला फिलहाल प्रिंटिंग के लिए गया है। हिंदी में फैसले का टाइटिल संभवतः श्री राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर उच्चतम न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय होगा। कवर पेज पर ऊपर सुप्रीम कोर्ट के गुंबद और नीचे राम मंदिर की प्रतिकृति का चित्र होगा।

हालांकि प्रकाशन से पहले कवर पेज आदि के दो तीन प्रारूप फाइनल करने से पहले मंजूरी के लिए भेजे जाते हैं अभी वह प्रक्रिया होनी है। ऐसे में कुछ बदलाव भी हो सकता है। विमोचन के बाद विधि साहित्य प्रकाशन हिन्दी में अनुवादित फैसला सुप्रीम कोर्ट को भी देगा। वैसे भी विधि साहित्य प्रकाशन करीब 10 हजार अनुवादित फैसले सुप्रीम कोर्ट को उपलब्ध करा चुका है। हिंदी के फैसले का विमोचन होने के बाद राम जन्मभूमि फैसले की हिंदी की प्रति सुप्रीम कोर्ट के सामने स्थिति भारतीय विधि संस्थान भवन में स्थिति विधि साहित्य प्रकाशन के काउंटर से खरीदी जा सकेगी।

संविधान दिवस पर होगा विमोचन

अभी तक के तय कार्यक्रम के मुताबिक संविधान दिवस पर कानून मंत्री हिंदी में राम मंदिर फैसले का विमोचन करेंगे। उस दिन संस्कृत में संविधान की नई प्रकाशित प्रति का भी विमोचन होगा। बताया जाता है कि विभाग में संस्कृत में संविधान की काफी मांग रहती है। 1985 में संस्कृत में संविधान प्रकाशित हुआ था और लंबे समय से संस्कृत में प्रकाशित प्रतियां समाप्त हो चुकी हैं ऐसे में अब फिर से संस्कृत में अपडेटेड नया संविधान प्रकाशित हो रहा है।

अपराधियों का महिमामंडन एक चिंताजनक प्रवृत्ति

जब अपराध को ग्लैमराइज़ किया जाता है, तो यह एक मिसाल क़ायम करता है जहाँ युवा अवैध गतिविधियों को सफलता और मान्यता के मार्ग के रूप में देखते हैं, जिससे सामाजिक नैतिकता प्रभावित होती है। ऐसी फ़िल्में जो अपराधियों को प्रसिद्धि या विलासिता प्राप्त करते हुए दिखाती हैं, युवाओं को अपराध को एक व्यवहार्य जीवन शैली के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर सकती हैं, युवा दर्शक अपराधियों को अपना आदर्श मानने लग सकते हैं, उन्हें साहसी व्यक्ति के रूप में देख सकते हैं जो व्यवस्था को चुनौती देते हैं, इस प्रकार सही और ग़लत की उनकी समझ को विकृत कर सकते हैं। लॉरेंस बिश्नोई जैसे व्यक्तियों को समर्पित सोशल मीडिया फैन पेज आपराधिक कृत्यों का महिमामंडन करते हैं, जिससे वे सराहनीय लगते हैं। फ़िल्मों और श्रृंखलाओं के माध्यम से आपराधिक महिमामंडन के लगातार संपर्क में आने से युवा हिंसा के प्रति असंवेदनशील हो सकते हैं, सहानुभूति कम हो सकती है और आक्रामकता सामान्य हो सकती है।

-डॉ सत्यवान सौरभ

मनोरंजन और समाचार मीडिया में अपराधियों का महिमामंडन एक चिंताजनक प्रवृत्ति बन गई है, खासकर अपराध में शामिल व्यक्तियों को नायक विरोधी के रूप में चित्रित करने में। यह ग्लैमराइज़्ड प्रतिनिधित्व न केवल न्याय और सत्य को बढ़ावा देने के लिए इन प्लेटफ़ॉर्म के नैतिक कर्तव्य को कमज़ोर करता है, बल्कि प्रभावित दर्शकों, विशेष रूप से युवाओं को अपराध को आकर्षक या वांछनीय मानने के लिए गुमराह करता है। इस तरह के चित्रण से मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारियों का पुनर्मूल्यांकन करने की ज़रूरत पड़ती है। अपराधियों को सनसनीखेज बनाकर, मीडिया की कहानियाँ आपराधिक न्याय प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं, कानून तोड़ने वालों को जवाबदेह ठहराने के बजाय उन्हें सहानुभूतिपूर्ण या वीरतापूर्ण प्रकाश में पेश कर सकती हैं।

जब समाचार आउटलेट किसी अपराधी की पृष्ठभूमि या उद्देश्यों को अत्यधिक कवर करते हैं, तो वे अनजाने में सहानुभूति पैदा कर सकते हैं, जिससे उनके कार्यों की गंभीरता कम हो जाती है। मीडिया चित्रण अक्सर अपराधियों को ग़लत समझे जाने वाले या विद्रोही व्यक्तियों के रूप में रोमांटिक बनाता है, जिससे एक विषम सार्वजनिक धारणा बनती है जो उनके कार्यों की सच्चाई को कमज़ोर करती है। अपराधियों का महिमामंडन समाज के नैतिक संतुलन को बिगाड़ता है, वास्तविक उपलब्धियों की बजाय अवैध साधनों के माध्यम से भौतिक सफलता को बढ़ावा देता है। मिर्जापुर जैसे शो एक ऐसी कहानी बनाते हैं जिसमें आपराधिक कृत्य धन और सम्मान की ओर ले जाते हैं, जो संभावित रूप से दर्शकों के मूल्य प्रणालियों को प्रभावित करते हैं। अपराधियों का महिमामंडन पीड़ितों के परिवारों के लिए बहुत ही दुखद हो सकता है, क्योंकि यह उनके द्वारा किए गए दुख को खारिज करता है और न्याय और जवाबदेही की आवश्यकता को नकारता है।

पुष्पा और गब्बर जैसे चरित्र जो कानूनी सीमाओं के बाहर अपराध से लड़ते हैं, वे सतर्कतावाद को रोमांटिक बना सकते हैं, जिससे न्याय की एक दोषपूर्ण समझ पैदा होती है। युवा दर्शक अपराधियों को अपना आदर्श मानने लग सकते हैं, उन्हें साहसी व्यक्ति के रूप में देख सकते हैं जो व्यवस्था को चुनौती देते हैं, इस प्रकार सही और ग़लत की उनकी समझ को विकृत कर सकते हैं। लॉरेंस बिश्नोई जैसे व्यक्तियों को समर्पित सोशल मीडिया फैन पेज आपराधिक कृत्यों का महिमामंडन करते हैं, जिससे वे सराहनीय लगते हैं। फ़िल्मों और श्रृंखलाओं के माध्यम से आपराधिक महिमामंडन के लगातार संपर्क में आने से युवा हिंसा के प्रति असंवेदनशील हो सकते हैं, सहानुभूति कम हो सकती है और आक्रामकता सामान्य हो सकती है।

मीडिया में महिमामंडन युवाओं को अपराधियों के व्यवहार या जीवनशैली की नक़ल करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है, जिससे उनकी शिक्षा और करियर के विकल्प प्रभावित हो सकते हैं। सोशल मीडिया पर शो से गैंगस्टर व्यक्तित्वों की नक़ल करने का चलन दर्शाता है कि आपराधिक चित्रण युवाओं को कैसे प्रभावित करता है। अपराधियों को प्रतिष्ठान के खिलाफ विद्रोही व्यक्ति के रूप में महिमामंडित करना युवाओं में कानून प्रवर्तन के प्रति अविश्वास को बढ़ावा दे सकता है। अपराधियों को भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ लड़ने वाले नायक के रूप में चित्रित करने वाले चित्रण कानून प्रवर्तन की सार्वजनिक छवि को नुक़सान पहुँचा सकते हैं। जब अपराध को ग्लैमराइज़ किया जाता है, तो यह एक मिसाल क़ायम करता है जहाँ युवा अवैध गतिविधियों को सफलता और मान्यता के मार्ग के रूप में देखते हैं, जिससे सामाजिक नैतिकता प्रभावित होती है। ऐसी फ़िल्में जो अपराधियों को प्रसिद्धि या विलासिता प्राप्त करते हुए दिखाती हैं, युवाओं को अपराध को एक व्यवहार्य जीवन शैली के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

मीडिया में आपराधिक व्यक्तियों के महिमामंडन को सीमित करने वाले दिशा-निर्देश लागू करें, विशेष रूप से युवाओं के लिए सुलभ सामग्री में। हिंसक या आपराधिक गतिविधियों को चित्रित करने वाली सामग्री के लिए आयु-आधारित प्रतिबंध लगाने से युवा दर्शकों के बीच जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है। मीडिया आउटलेट्स को सनसनीखेजता के बजाय जवाबदेही और न्याय पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपराधियों पर रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करें। सार्वजनिक प्रसारण एजेंसियाँ व्यक्तिगत अपराधियों का महिमामंडन करने के बजाय अपराध के निहितार्थों पर ध्यान केंद्रित करके एक मानक स्थापित कर सकती हैं।

स्कूलों में मीडिया साक्षरता कार्यक्रम लागू करें ताकि छात्रों को महिमामंडित आपराधिक सामग्री के प्रभाव का गंभीरता से विश्लेषण करने और समझने में मदद मिल सके। उदाहरण के लिए कार्यशालाएँ जो युवाओं को सनसनीखेज सामग्री से तथ्यात्मक रिपोर्टिंग को पहचानना सिखाती हैं, अपराधियों के लिए अनुचित प्रशंसा को कम कर सकती हैं। समुदाय के नेताओं को युवाओं के साथ आपराधिक महिमामंडन के नकारात्मक प्रभाव पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें रचनात्मक रोल मॉडल की ओर मार्गदर्शन करें। स्थानीय सामुदायिक केंद्र कानून और न्याय पर सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए पुलिस अधिकारियों या सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा वार्ता की मेजबानी कर सकते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों के सफल व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करने वाले मीडिया अभियान युवाओं को प्रशंसा करने के लिए रचनात्मक व्यक्ति प्रदान कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी, खेल और सामाजिक सेवाओं में नेताओं को प्रदर्शित करना नकारात्मक प्रभावों से ध्यान हटा सकता है। मीडिया में अपराधियों का महिमामंडन सामाजिक नैतिकता और युवा विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण जोखिम पैदा करता है। यह सुनिश्चित करना कि सामग्री जिम्मेदारी से तैयार की गई है और सकारात्मक रोल मॉडल को बढ़ावा देना एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण है जो न्याय और अखंडता को महत्त्व देता है। ज़िम्मेदार मीडिया चित्रण, सामुदायिक सहभागिता और नियामक निरीक्षण पर ध्यान केंद्रित करके, भारत एक ऐसा मीडिया वातावरण विकसित कर सकता है जो सकारात्मक सामाजिक मूल्यों को प्रेरित करता है और आपराधिकता के प्रति प्रशंसा को रोकता है।

समय सिंधु

समय सिंधु में क्या पता, डूबे; उतरे पार।
छोटी-सी ये ज़िंदगी, तिनके-सी लाचार॥

सुबह हँसी, दुपहर तपी, लगती साँझ उदास।
आते-आते रात तक, टूट चली हर श्वास॥
पिंजड़े के पंछी उड़े, करते हम बस शोक।
जाने वाला जायेगा, कौन सके है रोक॥
होनी तो होकर रहे, बैठ न हिम्मत हार।
समय सिंधु में क्या पता, डूबे; उतरे पार॥

पथ के शूलों से डरे, यदि राही के पाँव।
कैसे पहुँचेगा भला, वह प्रियतम के गाँव॥
रुको नहीं चलते रहो, जीवन है संघर्ष।
नीलकंठ होकर जियो, विष तुम पियो सहर्ष॥
तपकर दुःख की आग में, हमको मिले निखार।
समय सिंधु में क्या पता, डूबे; उतरे पार॥

दुःख से मत भयभीत हो, रोने की क्या बात।
सदा रात के बाद ही, हँसता नया प्रभात॥
चमकेगा सूरज अभी, भागेगा अँधियार।
चलने से कटता सफ़र, चलना जीवन सार॥
काँटें बदले फूल में, महकेंगें घर-द्वार।
समय सिंधु में क्या पता, डूबे; उतरे पार॥
छोटी—सी ये ज़िंदगी, तिनके-सी लाचार।
समय सिंधु में क्या पता, डूबे; उतरे पार॥

—प्रियंका 'सौरभ'

प्रयोगधर्मी भी बड़ा अजीब है

यह प्रयोगधर्मी भी बड़ा अजीब है,
काटने निकला है वोटो की फसल!
इसे शिवाजी की मूर्ति से परहेज है।
क्यों ऐसा करता है खुद भी नहीं जानता,
विदेशी मूल का है माटी को नहीं मानता।
खूब देता रहता है गारंटी अभी दी पाँच,
चुनाव बाद भी नहीं करना की जांच।

यह प्रयोगधर्मी भी बड़ा अजीब है,
काटने निकला है वोटो की फसल!
यह लहराता है हर जगह संविधान,
इसे दिखता हर तरफ ही व्यवधान।
सरकार में कुछ अच्छा नहीं चल रहा,
इसका दाना दस साल से न ग़ल रहा!
झूठ से ही इसका कारवां हैं चल रहा।

यह प्रयोगधर्मी भी बड़ा अजीब है,
काटने निकला है वोटो की फसल!
ये चाह रहा जाति से ही पाऊ ख्याति,
हर बार भाग्य में इनके अवनति आती!
इन्हें सकारात्मक राजनीति नहीं भाती।
हरियाणा में दिखी आंधी और सुनामी,
इन्हें मिली हार वो भी थी नामी-गिरामी।

संजय एम. तराणेकर

राउरकेला और चक्रधरपुर के बीच दो अलग-अलग पैसेंजर ट्रेनें

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

राउरकेला/भुबनेश्वर : यात्रियों की भीड़ को देखते हुए चक्रधरपुर-राउरकेला के बीच दो अनिर्धारित स्पेशल ट्रेनें चलेंगी। दक्षिण पूर्व रेलवे ने जानकारी दी है कि ये दोनों ट्रेनें 11 से 14 तारीख तक चलेंगी। राउरकेला-चक्रधरपुर (08021) राउरकेला स्टेशन से सुबह 10 बजे खुलेगी।धाखरपुर-राउरकेला (08022) ट्रेन दोपहर 1 बजे चक्रधरपुर स्टेशन से रवाना होगी। दोपहर 3:30 बजे राउरकेला स्टेशन पहुंचेंगे। ट्रेन राउरकेला-चक्रधरपुर के बीच जरिकेला, मनोहरपुर और पोसोइता स्टेशनों पर चलेगी।

आम टकुआ की मौत, दबाने की साजिश

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: आम का पेस्ट खाकर मौत की घटना को चबाने की कोशिश करें। कल किसी ने एक फोरेंसिक रिपोर्ट वायरल कर दी जिसमें पानी में हाइड्रोजन सल्फाइड की मौजूदगी का पता चला। पोस्टमार्टम रिपोर्ट न आने के कारण कहा गया कि मौत हाइड्रोजन सल्फाइड के कारण हुई। आज सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशालय के बयान से पूरी घटना की सच्चाई सामने आ गई है।उन्होंने कहा, हाइड्रोजन सल्फाइड में यह मौत नहीं हो सकती। क्योंकि हाइड्रोजन सल्फाइड युक्त पानी दस्त और उल्टी के लक्षण पैदा करता है। लेकिन कंधमाल के दो मृतकों के साथ ऐसा नहीं देखा गया। वायरल हो रही इस रिपोर्ट में विवादास्पद सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशक के बयान के बाद कई सवाल खड़े हो गए हैं। कैसे वायरल हुई फोरेंसिक रिपोर्ट? क्या अंबा टाकुआ खाने से हुई मौत को छुपाने का तरीका जानने के बाद भी सरकार ने इसे वायरल कर दिया?

मंडीपांका गांव में समय पर चावल का वितरण नहीं हुआ। आम टकुआ खाने से दो लोगों की मौत के बाद आनन-फानन में चावल का वितरण किया गया। आपूर्ति मंत्री कृष्णा पोटे ने बार-बार झूठ बोला है कि लोगों को चावल मिला है। बीजू जनता दल ने इसकी कड़ी आलोचना की है। पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने नयी ओडिशा का निर्माण किया। 2022 खाद्य सूचकांक में ओडिशा देश में नंबर एक था। संयुक्त राष्ट्र ने ओडिशा के खाद्य सहायता कार्यक्रम की सराहना की है। मंदीपंका आम ताकुआ की मृत्यु से ओडिशा की प्रतिष्ठा को झटका लगा है। बीजद ने आपूर्ति मंत्री को सस्ती टिप्पणियों से बचने और यथार्थवादी बनने की सलाह दी।कांग्रेस ने भी राज्य सरकार की आप्रवासन नीति की निंदा की है।

आपूर्ति मंत्री ने बार-बार झूठ बोला कि चावल उपलब्ध है, जबकि मुख्यमंत्री ने कहा कि चावल उपलब्ध नहीं है। हो सकता है कि ध्यान भटकाने के लिए मौत की खबर वायरल की जा रही हो। चूंकि वितरण व्यवस्था में जिला कलेक्टर और आरडीसी शामिल हैं, इसलिए बीजेडी ने आरडीसी के बजाय न्यायिक जांच की मांग की है। हालांकि, राज्य सरकार आरडीसी जांच की वकालत करते हुए चावल वितरण में लापरवाही के मुद्दे से बचने की कोशिश कर रही है। इस महीने की सरकार में दो बड़ी घटनाएं हैं। गंजाम में जहरीली शराब पीने से लोगों की मौत हो गई। कंधमाल में आम का पेस्ट खाकर जान गंवाने वालों के पीछे जाओ, लेकिन सरकार सच नहीं मानती। चूँकि राज्य सरकार बैकफुट पर है, इसलिए यह केवल अफवाह है कि वह अपनी छवि निर्माण में लगी हुई है।

झामुमो नेता व्यवसायी गणेश चौधरी के गम्हरिया कार्यालय में छापा

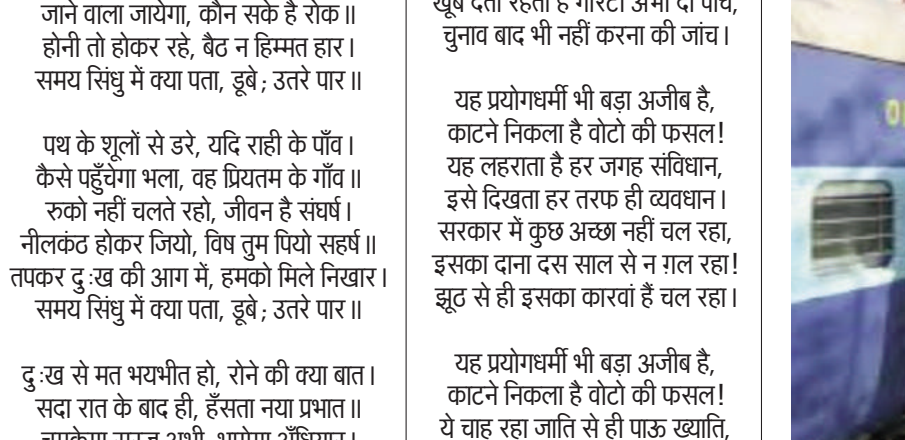

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

जमशेदपुर, सीएम हेमंत सोरेन के करीबी और क्षेत्र के जाने माने व्यवसाई सह झामुमो के केंद्रीय सदस्य गणेश चौधरी के आवास एवं कार्यालय में आईटी की टीम शनिवार को सुबह से छापेमारी कर रही है।एक अन्य जगह गम्हरिया औद्योगिक क्षेत्र के उषा मोड़ स्थित अंजनिया इस्पात कंपनी में भी आईटी की छापेमारी चल रही है। यहां भी सुबह 4 बजे आयकर विभाग सक्रिय हैं। बताया जाता है कि 18 सदस्यीय टीम गणेश चौधरी के आवास और कार्यालय पर सर्वे कर रही है।

गणेश चौधरी के पिता भोला चौधरी औद्योगिक क्षेत्र में परिवहन व्यवसाय से जुड़े बड़े व्यापारी रहे हैं। 2000 में झारखंड बनने के बाद झारखंडी नेता के तौर पर गणेश चौधरी उभरे । सरायकेला के तत्कालीन विधायक चंपई सोरेन के साथ उनका संबंध रहा । चंपई सोरेन से उनकी रिश्ते 2016-18 के बाद तब खराब होने शुरू हुए जब जब मोदी सरकार ने समुचे देश में विमुद्रीकरण कार्य को आरंभ किया । वहीं जे एम एम बैंकग्राउंड से होने के कारण मौजूदा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं उनकी सरकार से अच्छी संबंध रही । जब चंपाई सोरेन ने जे एम एम पार्टी छोड़ दी तब पुनः गणेश चौधरी वे जे एम एम में आ गये । इसी बीच गणेश महाली को भी टिकट नहीं मिलने के कारण उसने भाजपा छोड़ झामुमो का दामन थामा। अब चुनाव मैदान में है। गणेश चौधरी ने भारतीय जनता पार्टी नेताओ को लेकर मुखर हो रहे थे कि उनके कारोबार पर इनकम टैक्स का रेड पड़ा है ठीक चुनाव पहले। बताया जाता है कि विधानसभा चुनाव का बड़ा काम गणेश चौधरी के कंधे पर था।

बेटियां आत्मनिर्भर होती है

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

युवा भारत की इस संरचना में जितना योगदान पुरुषों का है उतना ही महिलाओं का भी रहा है। नारी देवी स्वरूपा हैं और हमेशा ही उनका स्थान उच्च स्तर पर ही रहेगा। भारत की बेटियां दूर गगन में उच्चाइयों को छू रही है। आज जिस प्रकार वह पंख फैलाकर हर एक क्षेत्र में वह आगे बढ़ रही है यह भारत की साख को भी बढ़ा रहीं हैं और यह शुभ संकेत भी है क्योंकि हर क्षेत्र में उनकी समाजिक भागीदारी सुनिश्चित होना भविष्य में दिन पे दिन उज्जवलता की बात है। पढ़ाई के क्षेत्र में बेटों से आगे बेटियां अब भी अव्वल है। उन्हें कमजोर व लाचार समझने वाले नासमझों को बहुत कुछ सोचना होगा । बेटियां तो डुबते हुए जहाज़ को भी पार लगा देती है। खुशी व ग़म दोनों मनुष्य के जीवन में आते है दुःख सुख के लिए कभी भी कमजोर नहीं होना चाहिए । आज हर एक क्षेत्र में बेटियां आत्मनिर्भर होती जा रही है। अब वह सेना में गोली बन्दूक चला रहीं हैं और सीमा पर प्रहरी बन देश की रक्षा में समर्पित हो रही है। अपनी आत्मनिर्भरता पर वह शोर्यवीरा बन कर अपनी आत्मरक्षा के लिए हाथों में तलवार लेकर वह चला रहीं हैं। यह हम भारतीयों के लिए गर्व की बात है, वक्त के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने वाली बेटियां आज जमाने से चार कदम आगे बढ़ रही है। जल थल नभ अग्नि वायु हर जगह वह कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। समाज में पनप रहे दानवों के कारण कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं जिससे दिल दहेल जाता है। गेगरेप दुष्कर्म बलात्कार की बढ़ती घटनाएं नारीशक्ति को भयभीत कर रही है तभी तो हाथों में तलवार लेकर आत्मरक्षा के लिए वह फिर से दुर्गा काली स्वरूपा बन कर आगे बढ़ रही है। वह कोई भी पापीयों के सामने डर नहीं सकतीं । इन महिषासुर दानवों को काली का वह रुप देखना ही होगा। क्योंकि नारी नारायणी भी है ओर वह दुर्गा भी है। समाजिक जिम्मेदारी व नैतिकता के मूल्यों को समझते हुए आज भारत की बेटियां आगे बढ़ रही है। तभी तो वह आत्मनिर्भर होती जा रही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023